जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

अक्टूबर 2017 प्रथम पक्ष पृष्ठः 52 मूल्यः 7:00 रुपये

युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. जन्म स्वर्ण जयन्ती विशेषांक

सत्य

चरित्र

अपरिग्रह

अचौर्य

भगवान महावीर निर्वाण दिवस
पर वंदन-नमन्
एवम् दीपावली
की आप सभी को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ

परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को हार्दिक वंदन-नमन्

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

दिनांक 18 सितम्बर 2017 को इंदौर में आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. को हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर वंदन करते हुए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती तत्र विराजित पू. महासतीवृंद।

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में पुस्तकों का विमोचन करते हुए श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री अविनाशजी घोरड़िया जैन, श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, श्री जे.डी. जैन जी, श्री बालचंदजी खरड़ जैन, श्री पारसजी मोदी जैन श्री जिनेश्वरजी जैन, श्री संतोषजी जैन 'मामा' आदि गणमान्यजन।

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के हीरक जन्मोत्सव पर जैन कॉन्फ्रेंस मध्य प्रदेश शाखा द्वारा स्थानीय हॉस्पिटल हेतु ऑक्सीजन मशीन प्रदान की गई। इस अवसर पर आक्सीजन मशीन के साथ जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारीगण अपनी शुभेच्छा एवं अनुमोदना प्रदान करते।

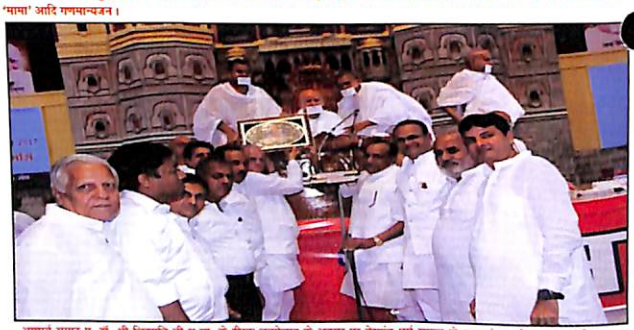

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर तेरापंथ धर्म समाज के आचार्य पू. श्री महाश्रमण जी म. द्वारा आचार्यश्रीजी को 'आध्यात्म ज्योत' से अलंकृत किया गया, जिसका अलंकरण तेरापंथ धर्म संघ का प्रतिनिधि मंडल आचार्यश्रीजी को सौंपते हुए।

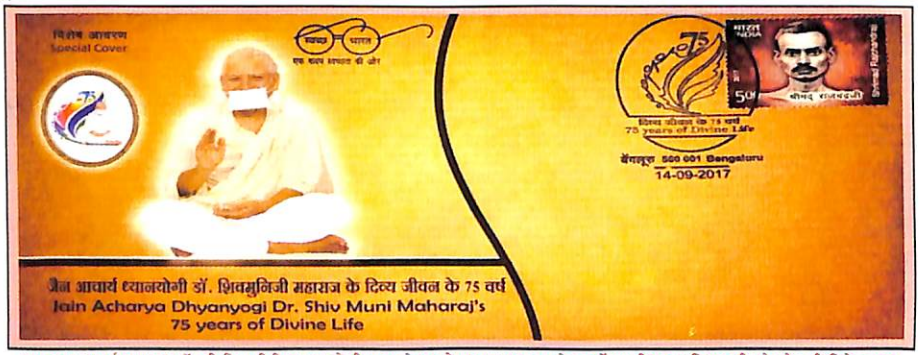

युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनीजी म. सा. के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर श्रद्धा के रुप में भारतीय डाक विभाग की ओर से जारी विशेष कवर।

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के हीरक जन्मोत्सव पर अपना उद्बोधन देते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन तथा संघासीन निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनावजी जैन एवं अन्य गणमान्यजन।

इंदौर में 17 सितम्बर 2017 को आयोजित वार्षिक साधारण सभा में मंचासीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी घोरड़िया जैन, श्री चंदनमलजी घोरड़िया जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, श्री जे. डी. जैन जी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमलजी तांतेड़ जैन।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 अंक-19 अक्टूबर 2017 प्रथम पक्ष 07-08 अक्टूबर मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
ध्यान जन-जन तक पहुंचे	आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी	10
युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि		11
संस्मरण	पू श्री कुंदनऋषि जी म.	13
युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी ...	पू. श्री प्रकाश मुनि जी म.	14
विनय गुण सम्पन्न...	पू. श्री शिरीष मुनि जी म.	15
युग पुरुष उ. भा. प्रवर्तक ...	पू. डॉ. श्री सुव्रत मुनि जी म .	16
श्रमण संघ को कोहिनूर	पू. डॉ. श्री राममुनिजी म.	17
हीरक जयंती पर ...	साध्वी पू. श्री डॉ. चिंतन जी म.	18
श्रवण संघ के गौरव	आर्या पू. श्री डॉ सुप्रभा जी 'सुधा'	19
भावी अनुशास्ता ...	पू. श्री आदर्श ज्योति जी म.	20
जन्म दिवस पर ...	पू. श्री पदमावती जी म.	22
मृत्यु क्या है?	श्री अविनाश चोरडिया जैन	23
अभिग्रहधारी पूज्य गुरुदेव...	श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन	24
वचन सिद्धयोगी ...	श्री अशोक कुमार धोका	26
हृदय के भाव ...	श्री प्रकाश झंबरलाल जैन	28
श्रमण संघीय उजियारी	श्री विनय जैन	29
आचार्य पू. श्री देवेन्द्र ...	श्री अशोक खिंवसरा जैन	30
अंधविश्वासों की बेड़ियाँ तोड़ें	डॉ. दिलीप धींग	32
अन्नदान	सौ. रुचिरा सुराणा जैन	33
युवा शक्तिपुंज सम्मेलन की झलकियाँ		34
युवा शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ ...		35
महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ ...		36
समाचार प्रकाश		37
शोक समाचार		49

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
- श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
- श्री मूलचंद जी महाराज
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
- श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
- श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
- श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
- श्री सुमन मुनि जी महाराज
- श्री रतन मुनि जी महाराज
- श्री मदन मुनि जी महाराज
- श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
- डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
- श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
- श्री आशीष मुनि जी महाराज
- श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
- श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
- श्री सहज मुनि जी महाराज
- श्री सुकन मुनि जी महाराज
- श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
- श्री तारक ऋषि जी महाराज
- श्री रमणीक मुनि जी महाराज
- श्री दिनेश मुनि जी महाराज
- श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
- श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
- श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
- श्री चंदना जी महाराज
- श्री सुधा जी महाराज
- श्री सुप्रभा जी महाराज
- श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :				09423962818	
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री बी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखवलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080 080	22383557 41221890	41223853	09448238429	09844058123
वैय्यावच्य समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

तमसो मा ज्योर्तिगमय -
चलो अंधकार से प्रकाश की ओर

- डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

आशा है आप सभी स्वस्थ एवम् कुशलमंगल होंगे। पर्युषण महापर्व समापन के पश्चात तपस्या कम हो जाती है, अपने-अपने कारोबार में, विशेषत, व्यापारी, उद्योगक एवं करदाता ऑडिट के चक्कर में व्यस्त हो जाते हैं। छात्र-छात्राएं पढ़ाई में और हमारी बहनें दशहरा-दीपावली के काम में व्यस्स्त हो जाती हैं। लेकिन इस बात को गम्भीरता से लेना है कि हमारे गांव में शहर में या तो उपनगरों में अगर चातुर्मास है तो गुरुभगवंतों की, परम श्रद्धेय संतों के प्रवचन, जिनवाणी सुनने हेतु एक घंटे का समय जरुर-जरुर निकालना है क्योंकि चातुर्मास का आयोजन हमारे लिए होता है जिनवाणी का ज्ञान हमें देने हेतु संत-सतियाँ अपना समय देते हैं, उन्होंने सब कुछ छोड़कर अपने-आपको समाज के लिए अर्पित किया है तो हमारा यह धार्मिक, नैतिक फर्ज़ बनता है कि हम भी उनकी जिनवाणी सुनकर जीवन में थोड़ा बहुत उताने का प्रयास करें। दिनांक 18 सितम्बर को ध्यान योगी तपस्वी आचार्य सम्राट प. पू. शिवमुनि जी म. सा का अमृत महोत्सव, हीरक जयंती महोत्सव बड़े उल्लास के साथ हजारों भक्तों की श्रद्धावान उपस्थिति में इंदौर में सम्पन्न हुआ। 'न भूतो न भविष्यति' ऐसा सुंदर मंगलमय एवम् श्रद्धा भक्ति से ओतप्रोत ऐसा यह नजारा देखकर आँखें तृप्त हो गयी, मन प्रसन्न हुआ। और आर्चाश्री जी के तेजस्वी, ओजस्वी मुखकमल को देखकर उनकी अमृतवाणी सुनकर सभी भक्तगणों ने प्रसन्नता की अनुभूति की। दिनांक 17 सितम्बर को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय प्रबंध समिति, राष्ट्रीय कार्यकारिणी प्रबंध समिति एवं वार्षिक सर्वसाधारण सभा का आयोजन इंदौर में किया गया। इन सभी सभाओं के सदस्यों की उपस्थिति लक्षणीय थी। बड़े सुन्दर रुप से और कई सदस्यों के अलग-अलग विचार-धाराओं से चर्चाऐं-सभाऐं सम्पन्न हुयी। विशेष बात यह है कि आचार्य श्रीजी ने, युवाचार्य श्रीजी एवं मंत्री जी के साथ वार्षिक सर्वसाधारण सभा में समापन के समय खुद उपस्थित होकर हमें सम्बोधित किया। मंगलमय आर्शीवर्चन देकर मंगलमय दिया। यह हमारे लिए जिन्दगी भर याद रहेगा ऐसा मंगलमय प्रसंग था। शायद जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में पहली बार यह मौका हमें मिला और कई महत्त्वपूर्ण निर्णय भी इन सभाओं में लिए गए। सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय श्री पारसजी मोदी जैन, डॉ. अशोककुमार पगारिया जैन, श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिंटू' की अगुवाणी से आचार्य श्री जी के मार्गदर्शन से दिनांक 11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक चार दिन का गंभीर ध्यान शिविर कॉन्फ्रेंस के सदस्य / पदाधिकारिओं के लिए रखने का निर्णय हुआ। मैं आप सभी को अनुरोध करना चाहूगा हूं कि इस शिविर के सम्मिलित होने हेतु आपका नाम हमारे पास देने की कृपा करें। वैसे ही हमारे आजीवन सदस्यता शुल्क भी 1 अप्रैल, 2018 से दम्पती सदस्यों के लिए 1500 से बढ़कर 2500 एवम् व्यक्तिगत सदस्यता शुल्क 1000 रु. से 1500 रुपये तक बढ़ाने का महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित

किया गया है। पति और पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने हेतु रुपये 1000 रु. सदस्यता शुल्क देना पड़ेगा। आप सभी से अनुरोध है भी आप के परिवार में गांव में शहर में जो भी स्थानकवासी श्रावक-श्राविकाएं, युवा साथी सदस्य नहीं हुये हैं उनको 31 मार्च तक ही आवेदन-पत्र/ सदस्यता फार्म भरकर जैन भवन, नई दिल्ली भेजने का प्रयास करें।

इस पखवाडे में परम पूज्य श्री पदमचन्द्र भण्डारी जी म.जन्म शताब्दी महोत्सव सभी ओर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो रहा है। वैसे हमें युवाचार्य परम पूज्य महेन्द्र ऋषि जी म. का जन्म दिन सभी ओर हम सभी सोलाल्स से सम्पन्न करने में व्यस्त हैं। युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म. महाराष्ट्र की पावन धरा 'चाकण' इस गांव से हैं, इसीलिए महाराष्ट्र की जनता विशेष उत्साहित एवं हर्षित है कि आपका जन्म दिन धूमधाम से अनेकों धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से सम्पन्न किया जाए।

आपकी सरलता, विनम्रता एवं सबको साथ में लेकर चलने की भावना, सहिष्णुता, आगम का गहरा ज्ञान, प्रवचन कुशलता, संघटन कुशलता इन सभी गुणों के आधारपर ही आचार्यश्री ने इस पद पर आपको अलंकृत किया है। हमारा यह अहोभाग्य है, सौभाग्य है कि इतने ज्ञानी-ध्यानी एवं सरल, सहिष्णु महान व्यक्तित्व को युवाचार्यपद पर देखते हैं। आपकी विनम्रता एवं सरलता के बारे में कहना चाहूंगा कि आपका अपने इस स्वभाव से हमें संदेश मिलता है कि:-

'सागर जैसा बड़ा एवम् खारा बनने के बजाय, तालाब जैसा छोटा एवं मीठा बनो कि जहां पर अगर शेर भी पानी पीता है तो सर झुकाकर!!!

गुरुदेव आप श्रमण संघ की आन-बान और शान हो, उज्जवल भविष्य हो तथा बहोत बड़ी सुन्दर उपलिब्ध हो, आपकी वाणी में, जिनशासन के प्रति आस्था, आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा ओतप्रोत भरी हुई है। आचार्य सम्राट हमारे सबके भगवंत प. पू. आनंदऋषि जी म. के प्रति आपका जो स्नेह है, श्रद्धा भक्ति है उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता, आपकी यह छारगा है कि जो भी आपको मिला है वह आनंद बाबा की एवं ध्यान योगी वर्तमान आचार्य श्री जी कृपा है, उनका आर्शीवाद आपके सर पर हमेशा रहा है और हमेशा रहेगा। हम आपके जन्म दिन पर आपको वंदन अभिनंदन एवं नमन करते हैं। आपको अच्छा स्वास्थ्य मिले गुरुभगवंतों का आर्शीवाद मिले एवं श्रमण संघ की एकता अखण्डता बनाए रखने की सामथर्य मिले, जिनशासन की प्रभावना करने हेतु आप शत शत जियो, यही मंगलमय कामना करते हुए मैं अपने शब्दों को विराम देता हूं।

मैं आप सभी को दीपावली की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं देते हुए आपके जीवन में ज्ञान और सदगुणों का प्रकाश आपके जीवन को प्रकाशमय बनाये। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'।**

इस पखवाड़े/माह में भगवान महावीर निर्वाण दिवस, दीपों का पर्व (दीपावली), प.पू. आचार्य देवेन्द्र मुनि जी म. सा. जन्म जयंती, उपाध्याय पू. श्री कस्तूरचंद जी म. सा. स्मृति दिवस एवं परम पू. श्री मदन मुनि जी म. सा. का दीक्षा दिवस है। मैं सभी को और जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से सभी गुरु भगवंतों को हार्दिक अवंदन नमन करता हूँ। ✧✧

।।सुविचार।।

दिन के उजियाले में,
ऐसा कोई काम मत करना,
कि रात के अंधियारे में नींद ही न आए।
रात्रि के अंधियारे में ऐसा कोई काम मत करना,
कि दिन के उजियाले में मुंह ढांपकर चलना पड़े।।

अध्यक्षीय उद्गार

सबका साथ : सबका विकास

- मोहनलाल चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्मनीय बन्धुओ,

सादर जय जिनेन्द्र!

युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि ज़ी म. सा. के पावन हीरक जन्म दिवस के अवसर पर इंदौर में आचार्यश्री जी के जन्म दिवस की पूर्व संध्या से पहले दोपहर में दिनांक 17 सितम्बर 2017 को जैन कान्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं राष्ट्रीय साधारण सभा का आयोजन किया गया। तीनों ही सभाएं सदन सदस्यों की भारी उपस्थिति में बहुत ही सुन्दर माहौल में संपन्न हुई।

तीनों ही सभाओं में वर्ष 2016-17 के ऑडिटिड अकाउंट्स (Balance Sheet) को प्रस्तुत किया गया। गत् वर्ष के मुकाबले में इस वर्ष Balance Sheet को Profit में लाने के लिए किए गए जैन कॉन्फ्रेंस परिवार के प्रयास सार्थक साबित हुए, जिसको सभी सदन सदस्यों ने हर्ष-हर्ष की ध्वनि के साथ सर्वसम्मति से पारित किया। ऐसा इसीलिए संभव हो पाया, क्योंकि हमें सभी सदस्यों का, कार्यकर्त्ताओं का भरपूर साथ मिला। सबका साथ ही समाज का विकास करता है। सबके साथ के लिए हृदय की असीम गहराईयों से हार्दिक धन्यवाद। **वार्षिक साधारण सभा में श्रमण संघीय समाचारी पर प्रस्ताव पारित किया गया, जिसको इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।**

दिनांक 18 सितम्बर, 2017 को आचार्यश्री जी का जन्म दिवस हजारों जनमेदिनी के भक्तों के साथ मनाया गया। आचार्यश्री जी वर्तमान के युग में स्वयं भगवान सम हैं। लोगों को आत्म-ध्यान की ओर जागरूक कर, लोगों का जीवन सार्थक बना रहे हैं। देखने में भी आ रहा है कि जो भी व्यक्ति आचार्यश्री जी के ध्यान शिविरों में जाता है वह स्वयं को संतोषप्रद महसूस करता है तथा दूसरों को भी ध्यान शिविर में जाने हेतु प्रेरित करता है। परम श्रद्धेय आचार्यश्री जी इसी प्रकार जिनवाणी का प्रचार-प्रसार एवं धर्म-ध्यान की गंगा प्रवाहित करते रहें, स्वस्थ रहें, ऐसी वीर प्रभु से मंगल कामनाएँ करता हूँ।

दिनांक 5 अक्टूबर को श्रमण संघीय युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. का स्वर्ण जन्म दिवस है, जोकि पत्रिका प्रकाशित होने से पहले ही हम सब धूमधाम से धार्मिक अुनष्ठानों के साथ मना चुके होंगे। युवाचार्यश्री जी खूब धर्म-ध्यान एवं जनमानस के मंगल के कार्यकर रहे हैं युवाचार्यश्री जी को उनके ऐसे ही धर्म-ध्यान के कार्यों के लिए अनेकों उपाधियों से अलंकृत किया गया है। युवाचार्यश्री जी स्वस्थ रहें और जिनवाणी का प्रचार करते रहें। युवाचार्यश्री जी को जन्म दिवस पर हार्दिक-हार्दिक शुभ मंगलकामनाएँ।

आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म. जन्म जयंती 17 अक्टूबर, उपाध्याय पू. श्री कस्तूर चंद जी म. का स्मृति दिवस 12 अक्टूबर एवं प्रवर्तक पू. श्री मदनमुनि जी म. के दीक्षा दिवस पर 17 अक्टूबर पर वंदन नमन। भगवान महावीर निर्वाणोत्सव दीपावली पर्व पर सभी देशवासियों को हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं। ✧✧

शिव संदेश...

ध्यान जन-जन तक पहुंचे

- युग प्रधान सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.

आज जैन धर्म को जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है। गांधीजी ने जैनत्व को अपने जीवन में आत्मसात् किया तो भारत को आजादी दिलाने में एक महत्वपूर्ण योगदान मिला। उन्होंने जैन धर्म को आत्मसात् किया तो आज विश्व में गांधी दर्शन के नाम पर जैन दर्शन का अध्ययन हो रहा है। गांधीजी ने अहिंसा, सत्य, अनेकान्त, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तो को जीवन शैली में प्रयोग किया। आज विश्व उनके जन्म दिवस को अहिंसा दिवस के रूप में मना रहा है।

हमने इसी दिवस को विश्व ध्यान दिवस के रूप में मनाना प्रारंभ किया। देश भर में जगह-जगह पर सभी साधक उस दिन ध्यान के स्वयं प्रयोग करे एवं समुह में सबको ध्यान करावें। आज प्रत्येक व्यक्ति अशांत है सबको शांति चाहिए। शांति भीतर है व्यक्ति बाहर ढूंढ रहा है। भीतर में अनंत सुख, शांति, आनंद के खजाने को प्राप्त करने की विधि सिखाते है, ध्यान के द्वारा। उस दिन का पारस चैनल अरिहंत चैनल द्वारा भी लाइव प्रसारण करवाया जायेगा।

5 अक्टूम्बर को हमारे युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. का जन्म दिवस है। भगवान महावीर ने कहा -

जम्म दुःखं जरा दुःखं रोगा य मरणाणे य, अहो दुःखो हु संसारो जत्थ कि संति जंतुवे।। - उत्तराध्ययन

हे मानव संसार में जन्म, मरण, रोग का भयंकर दुःख इससे बाहर निकलने का पुरुषार्थ कर। हमारे युवाचार्य श्री जी आत्म-ध्यान योग स्वाध्याय तप एवं संघ सेवा से महान कर्म निर्जरा के मार्ग पर बढ़ रहे हैं। जीवन के प्रत्येक पल का आत्म-साधना में प्रयोग करेगे तो निश्चित वीतरागता में आगे बढ़ जायेगो, आत्म बल जिसके पास है उसके पास सारे बल चलकर आ जायेगें। जिसके पास जन बल, धन बल, राज बल है, किन्तु आत्म बल नहीं है तो ये सब यही छूट जायेगें।

अतः आत्म बल बढ़ाने के लिए वे हमारे साथ रहकर आत्म-साधना को मुख्यता दे रहे है। जिनशासन की सेवा कर रहे हैं। हमारी उनके स्वर्ण जयंती पर यही हार्दिक मंगल कामना है कि वे स्वर्ण की तरह कसौटी पर कसते हुए अपने संयम साधना में और परिपक्व हो। क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त कर अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर बढ़े यही हार्दिक मंगल भावना।

उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी पू. श्री पदम चन्द जी म. की शताब्दी का समापन हो रहा है वे सरल हृदयी सन्त थे। स्वाध्याय व जिनवाणी के प्रति उनका विशेष समर्पण रहा। दीपावली के पावन अवसर पर प्रभु महावीर ने जो कहा उसको हम प्रवचन में बोलकर नहीं रूक जाये। उसे हम स्वयं जीये तो हमारा भी सिद्धत्व, निर्वाण दूर नहीं, हमारा पुरुषार्थ महावीर जैसा हो।

इन्दौर चातुर्मास समापन की ओर बढ़ रहा है। इन्दौर चातुर्मास स्व पर कल्याण की दृष्टि से उत्तम रहा। साधना में सहयोग मिला तथा अनेकानेक भवी जीवों को आत्मदृष्टि प्राप्त हुयी। सभी सन्तों में आत्मीयता पूर्वक वातावरण में संघ, समाज की सेवा की।

जिनशासन की प्रभावना हुयी, चतुर्विध संघ में धर्म के प्रति आस्था बढ़ी।

भगवान की वाणी है एक साधु की तरह चातुर्मास के लिये प्रवेश करो व साधु की तरह विहार कर जाओ। इस संदेश ने हमारा कर्ता भाव तोड़ा। मोह के आकर्षणों से बचाया व वीतरागता की ओर हम बढ़ते गये। शेष काल में विचरते हुए अधिक से अधिक क्षेत्र स्पर्शना में श्रमण संघ की एकता के साथ वीतराग साधना को मुख्यता देवे। मंगल मैत्री के साथ। ✧✧

युवाचार्य श्री - महेन्द्रऋषिजी म. सा.

श्रमण संघ के महाप्राण, जन-जन के श्रद्धास्थान राष्ट्रसन्त आचार्य सम्राट प. पू. श्री आनन्दऋषिजी म.सा. के लाडले, प्रबुद्ध एवं सुविज्ञ सुशिष्य जिनशासन गौरव सुमधुर गायक, प्रज्ञा महर्षि, युवाचार्य **'श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.'** का जन्म महाराष्ट्र की पावन धरा चाकण में हुआ। भटेवरा परिवार के कुलभूषण राहु निवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक रत्न श्रीमान् स्वार्थीलालजी के सुपुत्र एवं सुशील स्वभावी लीला देवी के दुलारे, गुरुवर आनन्दऋषिवर के प्यारे, जन-जन की आँखों के तारे, जिनशासन की चारित्र वाटीका को सुशोभित कर रहे हैं।

पू. युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. को प्रबल पुण्योदय से मात्र 7 वर्ष की बालवय में कल्पतरू सम आचार्य सम्राट आनंदगुरु का सुपावन सान्निध्य पाया तथा वैराग्य के अंकुर अंकुरित हुए। निर्मल झरनों को कोई भी रोक नहीं सकता उसी भांति "बालक मंजू भटेवरा" के अंतर हृदय में प्रस्फुटित सुदृढ़ वैराग्य भाव को कोई भी रोक नहीं पाया, कहा है-**"होनहार वीरवान के होत है चीकने पात"** इस उक्ति को आपश्री ने सार्थकता दी। आपश्रीजी के जीवन का टर्निंग पॉइन्ट आया। आपश्रीजी के जीवन को सजाने वाले, संवारने वाले, घड़ने वाले ऋषिवर आनंद मिले।

जीवन के 15 वे वंसत में 3 फरवरी 1982 की स्वर्णिम सुखद मंगलमय पावन घड़ी उपस्थित हुई और महान चरित्रनायक आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. ने आपश्रीजी को पुणे में देवदुर्लभ संयम रत्न प्रदान किया। गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि है इस सत्संकल्प के साथ आपश्रीजी की संयमी यात्रा प्रारंभ हुअी। गुरु आनंद के विनयी मेधावी सुशिष्य बनकर संयमी जीवन को पल्लवित तथा पुष्पित कर रहे हैं।

आज वर्तमान में आपश्री आराध्य आनंद गुरुवर के पद्चिन्हों पर गतिमान है। आचार्य आनंद ऋषिवर का स्वप्न था कि लाड़ला सुयोग्य शिष्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी महान् विद्वान पंडित तथा शास्त्रों का ज्ञाता बने, संस्कृत, प्राकृत, न्याय एवं दर्शन आदि विषयों का संत-सतियों को अध्यापन कराए। इस गुरुवर के स्वप्न को साकार होता हम प्रत्यक्ष में देख रहे हैं।

विनय तथा विनम्रता के साथ आपश्री ने संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं पर प्रभुत्व पाया है, आपश्री ने आनंद की सरगम, सुमिरण जिनेश्वरों का, गुरु आनंद प्रसादी आदि साहित्य का सर्जन किया है।

आचार्यश्री आनंदऋषिजी म.सा. के सान्निध्य में प्रतिदिन दोपहर 3 से 4 बजे तक आगम वाचन होता, उसमें अधिकांश आपश्रीजी के मुखारविन्द से वाचन होता था। अनेको संस्कृत श्लोक, दोहे तथा सवैद्ध या आपश्री को मुखगत (कंठस्थ) है।

आपश्री प्रतिभा सम्पन्न, ज्ञाननिधि तथा सदैव हंसमुख हैं, साथ ही आपश्री की मिलनसारिता, स्पष्टवादिता, मधुरता काबिले तारीफ है। गुरु और जेष्ठो के प्रति विशेष आदरभाव एवं छोटे संतो के प्रति स्नेहभाव आपश्री में परिलक्षित होता है। आपश्री की योग्यता देखकर महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म. सा. ने आपको 'ज़िनशासन प्रभावक', संपूर्ण विदर्भ प्रान्त की ओर से 'विदर्भ शिरोमणी' आचार्य भगवन्त डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के द्वारा आपको **'श्रमणसंघीय मंत्री'**, इंदौर वर्षावास में **'प्रज्ञा महर्षि'** एवं खाचरौद श्री संघ की ओर से **'आगम रत्नाकर'** पद दिया गया। आपने महाराष्ट्र, छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात आदि प्रांत में विचरण किया है। आचार्य भगवंत पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा, आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के मंगल आशीर्वाद से एवम् श्रमणसंघीय समस्त जेष्ठ संतवृंद के आशीर्वाद से आचार्य सम्राट ने 27

मार्च 2015 को श्रावक-सम्मेलन में **'युवाचार्य'** पद की घाषणा की। करीब 25 हजार श्रावकों ने हर्ष-हर्ष की ध्वनी से पूरा पांडाल गुंजा दिया। पूरे इंदौर शहर में खुशिया छा गई। फिर 29 मार्च को आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने समस्त श्रमणसंघीय वरिष्ठ साधु-साध्वीवृंद के साथ आपको आदर की चादर प्रदान की। इस अवसर पर करीब सव्वा लाख गुरुभक्त संपूर्ण भारतवर्ष से उपस्थित थे।

युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म.सा. भारत के हर क्षेत्रों में विहार करते हुए आडम्बर रहित साधनामय ज्ञान-दर्शन-चरित्र, तप, रूप ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न करके जनमानस में धर्मभावना की अभिवृद्धि कर रहे हैं, जिनशासन की अपूर्व जाहोजलाली कर रहे हैं। सकल श्रीसंघ आपश्री के योगदानों का ऋणी है और सदैव ऋणी रहेगा।

जीवन परिचय

नाम	–	पूज्य श्री महेन्दऋषिजी म.सा.
जन्म नाम	–	महेन्द्र (मंजू)
जन्म दिनांक	–	05-10-1967
जन्म स्थान	–	चाकण (पुणे)
माता का नाम	–	सौ. लीलाबाई भटेवरा जैन
पिता का नाम	–	श्री. स्वार्थीलालजी भटेवरा जैन
भाई	–	राजेन्द्र, संजय, अजय, अभय
बहन	–	सुविता (राणी)
दीक्षा गुरु	–	आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषिजी म.सा.
दीक्षा दिनांक	–	03-02-1982
दीक्षा स्थान	–	पुणे (नेहरू स्टेडियम)
अध्ययन	–	संस्कृत प्राकृत का प्रगाढ अध्ययन, आगमो का प्रगाढ़ अध्ययन, मधुर वक्ता, मधुर गायक आदि कई विषेशताएं
पद	–	श्रमण संघीय युवाचार्य (आचार्य प्रवर डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. द्वारा) श्रमण संघीय मंत्री (आचार्य प्रवर डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. द्वारा) जिनशासन प्रभावक (महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुंदनऋषिजी म.सा. द्वारा) विदर्भ शिरोमणी (संपूर्ण विदर्भ के श्रीसंघ द्वारा) प्रज्ञा महर्षि (महावीर भवन, इंदौर श्रीसंघ द्वारा) आगम रत्नाकर (खाचरौद श्रीसंघ द्वारा)
साहित्य रचना	–	आनंद के स्वर, आनंद की सरगम, आनंद स्तोक महक, सुमिरण जिनेश्वरो का, गुरु आनंद प्रसादी, अनेक पत्र-पत्रिकाओं मे विविध लेख
भाषा ज्ञान	–	हिंदी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि।
शिष्य	–	हितमितभाषी श्री हितेन्द्रऋषि जी

संस्मरण

- प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म.

पंजाब के मलोट नगर में एक संपन्न ऐसा ओसवाल परिवार रहता है। जो बहुत ही धार्मिक, श्रद्धालु परिवार है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विंध्यामाता ने एक पुत्र रत्न का जन्म दिया। जिसका नाम रखा शिवकुमार। बचपन ही उसके मन में धर्म के प्रति श्रद्धा अनुराग था। बचपन से घर के अंदर परिवार में ध ार्मिक श्रद्धा होने से बालक में भी वे संस्कार चले आए थे। वह भी अपना समय धार्मिक अनुष्ठान में अधिक देता था। व्यवहारिक शिक्षा के साथ धार्मिक भी अध्ययन करता रहा। उनकी बुआ की भी कन्याएँ धार्मिक होने से एक दूसरे के साथ धार्मिक अनुष्ठान की बातें चलती थी व्यवहारिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी लेते रहे। दोनों की ही बचपन से दीक्षित होने की तैयारिया चल रही थी। तब शिवकुमार के माता-पिता ने कुछ समय के लिए विदेश यात्रा पर भेजा था। एम.ए. कराया तो भी जन्म जन्मांतर के संस्कार थे। घरवाले उन्हें वैराग्य से डिगा नहीं सके। पहले से आचार्य आत्माराम जी म. के परिवार पर आपके परिवार की आस्था थी। उनके शिष्य रत्न श्री ज्ञानमुनिजी म. की सेवा में जाते थे, वहाँ वैराग्य भावना बढ़ती गई। आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषि जी म. दिल्ली की तरफ विहार कर रहे थे। अतः एक गांव में ठहरे थे। वहां पर आप तथा आपकी भुआजी तथा उनकी लड़कियाँ रास्ते में दर्शनार्थ पहुंचे थे।

उस समय आपने बता दिया था कि हम भी दीक्षा लेने के लिए भावना रखते हैं। आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषि जी म. ने उनके भावना की भूरी-भूरी प्रशंसा की और उनके वैराग्य में भी अनुमोदन करके प्रेरित किया। बाद में भी समय-समय पर पंजाब में आते रहे और अपने ज्ञान ध्यान की वृद्धि करते रहे। जम्मू चातुर्मास में तो आप पर्युषण में आठ दिन ठहरकर अठाई करी थी। बाद में भी समय-समय पर आते रहे और आचार्य भगवंत भी सभी क्षेत्रों को फरसते हुए अभारे से मलोट की ओर पधारे थे। उस समय आपके पूरे परिवार में सेवा का लाभ लिया था। उसके बाद आपने सन् 1970 में आपने दीक्षा ली थी कई वर्षों तक अपने गुरु बहुश्रुत श्री ज्ञानमुनि जी म. के साथ रहकर अच्छा संयम का पालन किया और बाद में राजस्थान की ओर आप पधार गये। पूणे का श्रीसंघ आपकी सेवा में जोधपुर था। वहां पर महाराष्ट्र में पधारने की विनती की थी और आपको महाराष्ट्र मे ले आए।

सन् 1986 का वर्षावास भी पुणे में था। आप भी पुणे पधारे थे उस समय आचार्य भगवंत का पिता पुत्र के समान मिलन हुआ और कई दिनों तक साथ में रहे। आपकी शालीनता, विद्वता देखकर बहुत प्रभावित हुए और मन ही मन में आपको उत्तराधिकारी बनाने का ठान लिया संघ को प्रेरणा देकर सन 1987 का सम्मेलन पुणे में करने की प्रेरणा भी दी। 1987 के साधु-सम्मेलन में काफी संत-सतियों का आगमन हुआ बड़े उत्साह के साथ सम्मेलन उपाचार्य साहित्कार पू. श्री देवेन्द्रमुनि जी म. को उपाचार्य और आपश्री को युवाचार्य घोषित किया। सम्मेलन भी बहुत सार्थक और सफल होने से जनता प्रसन्न हुई। आचार्य भगवंत पू. श्री देवेन्द्रमुनि जी म. के पश्चात आपको आचार्यपद से घोषित किया गया, दिल्ली सम्मेलन में आचार्यपद की चद्दर दी गई। आप दीर्घायु हो, आपके द्वारा जिनशासन की प्रभावना होती रहे यही हमारी मंगलकामना, शुभकामना।

✧✧

युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

- प्रवर्तक पू. श्री प्रकाशमुनि जी म. 'निर्भय'

प्रसन्न वदन, मधुरभाषी, आगम विशारद, भव्य व्यक्तित्व के धनी है। युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.। उम्र के 50 वसन्त पूर्ण कर चुके युवाचार्य अपनी विद्वता और मधुर कंठ से हजारों श्रोताओं को भगवद वाणी और भक्तिभाव से अप्लावित करते हैं। विनम्रता और विवेक आपके सहयोगी है, तो गुरुवर श्री आनंदाचार्य की महती कृपा आपका सुदृढ़ संबल है। आपका साधनाशक्ति मानस प्रणीमात्र के उद्धार एवं कल्याण की कामना करता है।

आज से 50वर्ष पूर्व माता श्रीमती ललाबाई एवं पिता श्रीमान् स्वार्थीलाल जी भटेवरा के एक सपना देखा था कि हमारा यह पुत्र साधना के पथ का राही बनकर श्रद्धेय श्री आनंदाचार्य की अंगुली पकड़कर अपना आत्मोत्थान करे। कहते है कि सब सपने साकार नहीं होते, किन्तु माता-पिता का यह सपना साकार ही नहीं, अपितु सार्थक भी हुआ। सच माता-पिता का वात्सल्य जिस भाव के साथ पुत्र पर बरसता है। वे भाव पूर्णता को उपलब्ध भी होते हैं।

गुरुवर पूज्यश्री आनंदाचार्य का पवित्र पावन सान्निध्य और उनका वरद हस्त आपके जीवन निर्माण में वरदानी बना। आपका समर्पण यह आपकी पुनीत पात्रता का दर्शन कराता है। शिष्य का समर्पण ही उसके जीवन निर्माण की भूमिका प्रशस्त करता है। गुरु ने शिष्य की पात्रता दोष अपना अनमोल खजाना शिष्य को सहर्ष प्रदान कर दिया और विनय के गुण के माध्यम से उसे न केवल ग्रहण किया अपितु उस ज्ञानराशि को सुरक्षित भी रखा और संवर्धित भी किया।

गुरु का आशीर्वाद पुण्य वृद्धि में भी सहयोगी बनता है। यही कारण रहा कि आप श्रमण संघ रुपी विराटसंघ के भावी अनुशास्ता - युवाचार्य पद से लाखों की जन्मेदिनी में सुशोभित हुए। आपके पुण्य और पुरुषार्थ, गुरुओं का आशीर्वाद और श्रमण संघ के वर्तमान आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. का आपूट वात्सल्य आपके जीवन को ओर अध्कि ज्योतिर्मय बनाये, यही आपके 51वें बासन्ती जीवन प्रवेश पर हार्दिक शुभकामनाएं-सदेच्छा। ✧✧

ईश्वर ने सृष्टि की रचना करते समय तीन विशेष रचना की

1. अनाज में कीड़े पैदा कर दिए:-
   वरना लोग इसका सोने और चाँदी की तरह संग्रह करते।
2. **मृत्यु के बाद देह (शरीर) में दुर्गन्ध उत्पन्न कर दी:-**
   वरना कोई अपने प्यारों को कभी भी जलाता या दफन नहीं करता।
3. **जीवन में किसी भी प्रकार के संकट या अनहोनी के साथ धैर्य और साहस दिया:-**
   वरना जीवन में निराशा और अंधकार ही रह जाता, कभी भी आशा, प्रसन्नता या जीने की इच्छा नहीं होती। ✧✧

विनय गुण सम्पन्न युवाचार्यश्री जी

- श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि जी म.

युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी की स्वर्ण जयंति पर उनके विनय, गुण की अनुमोदना करता हूँ। उन्होने संयम साध्ना, विनय, मिलनसारिता, स्वाध्याय-ध्यान के माध्यम से आचार्यश्री जी के हृदय में ही नहीं पूरे चतुर्विध संघ में अपना स्थान बना लिया है। ये उनके विनय गुण एवं संयम के प्रति निष्ठा का परिणाम है।

14 जनवरी 2015 से उनके साथ रहने का अवसर मिला। बच्चे, युवक, वृद्ध सबके साथ आत्मीयता पूर्ण व्यवहार ये उनकी विशेषता है। उनके पास न वोट का बल था, न नोट का बल था, उनके पास संयम का बल था। उन्होंने शिवाचार्यश्री की सेवा में रहकर यह प्रमाणित कर दिया की जिनशासन में सेवा-साधना संयम का बल ही आत्मबल बढ़ाता है और युवाचार्य बनने के बाद आपने आत्म-ध्यान व आत्म ज्ञान को महत्व देकर वीतराग धर्म को आत्मसात् करते हुए जीवन में संवर-निर्जरा को मुख्यता दी है। आपके 50वें जन्म दिवस पर यही भावना आपका जन्म दिवस जन्म कल्याणक बने। आपकी सेवा में रहकर हमें अति आनंद का अनुभव हो रहा है। सूरत एवं इन्दौर चातुर्मास में आपने हम सभी छोटो सन्तो को आत्मीयता का वातावरण देकर अपने आदर्श जीवन की अमिट छाप हम सब पर छोड़ी है।

श्रमण संघ अनुशासन व्यवस्था के साथ साधनात्मक दृष्टिकोण से जिनशासन की सेवा में समर्पित है। चतुर्विध संघ का आधार सम्यक्त्व है। मिथ्यात्व छूटे, सम्यक्त्व का पोषण हो। (1) मिथ्यात्व है मैं परिस्थितियों को बदल कर सुखी होउंगा। (2) परिस्थितियाँ मुझे सुख देगी। (3) 'पर' मुझे सुख देगा। (4) इन्द्रियो के अनुकूल विषय मुझे सुख देगें।

शिवाचार्यश्री जी के सान्निध्य में हजारो साधको ने यह अनुभव किया की सुख 'स्व' में है, 'आत्मा में' है। आत्मा का बोध प्राप्त कर, आत्म ध्यान के द्वारा आत्मा में ही हम सुख का अनुभव कर सकते है।

यह ऐसा सुख है जिसको प्राप्त करने में एक भी नया कर्म बन्धन नहीं होता बल्की पुराने अज्ञान दशा में बांधे कर्म क्षय होते है। तथा हर हाल में सुखी रहकर आत्मा का पोषण करते है। सभी साधक शाश्वत सुख के अनुभव के लिए नित्य साधना करें। इससे आपके कषाय दूर होगें कर्ता भाव टूटेगा। दृष्टा भाव पुष्ट होगा। युवाचार्य श्री जी इसी वीतराग यज्ञ को आगे बढ़ाते रहे यही उनके स्वर्ण जयंती पर हार्दिक बधाई। ✧✧

।।अनमोल वचन।।

रेस जीतने वाले घोड़े को ही पता भी होता कि जीत वास्तव में क्या है, वो तो अपने मालिक द्वारा दी गई तकलीफ की वजह से ही दौड़ता है।
इसलिए यदि आपके जीवन में कभी कोई तकलीफ आए तो समझ लेना कि आपका मालिक आपको जीताना चाहता है।

युग पुरुष उ. भा. प्रवर्तक राष्ट्र संत भंडारी जी

- पू. डॉ. श्री सुव्रत मुनिजी म.

भारत भूमि अनादि काल से ऋषि मुनियों की जन्म स्थली रही है। समय-समय पर आविर्भाव पाने वाले त्यागी तपस्वी तेजस्वी संतों ने मानव मात्र के लिए सांसारिक सुखों को ठुकराकर संयम साधना को अपना और उससे प्राप्त आत्म बोध को मानवता के उत्थान और नवनिर्माण के एि उदारता से सर्वत्र वितरित कर दिया। ऐसे ही दिव्य महापुरुष थे पूज्य प्रवर राष्ट्र सनत उत्तर भारत श्रमण जैन संघ के प्रवर्तक श्री भण्डारी पदमचन्द जी महाराज।

परम पूज्य गुरुदेव उत्तर भारत प्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म. ने जीवन परिष्कार सुसंस्कार सर्जन, समन्वय शीलता, समाज जागरण, अनुशासन दृढ़ता और व्यसन मुक्ति का जोरदार अभियान चलाया। उससे मानवता का बड़ा उपकार हुआ। तत्कालीन मानव समाज को नूतन दिशाबोध का जो अभियान गुरुदेव ने चलाया, वह उनका दिव्य अवदान सिद्ध हुआ और वे युग पुरुष की परिभाषा पर सत्य प्रमाणित हुए। युग पुरुष की व्याख्या करते हुए राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखाः-

सब की पीड़ा के साथ व्यथा,
अपने मन की जो जोड़ सके।
मुड सके जहाँ तक समय उसे,
निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके।
युग पुरुष वही सारे समाज का,
निहित धर्म गुरु वह होता है
सबके मन का जो अंधकार
अपने प्रकाश से धोता है।।

निश्चित रुप से पूज्य गुरुदेव का अहिंसा महाव्रत, प्राणी मात्र की रक्षा, प्रेम, करुणा सेवा भाव और विश्व बन्धुत्व से औत-प्रौत था बल्कि उनका जीवन व्यवहार दूसरों की पीड़ा दूर करने के लिए अपने सुखों का बलिदान करने का होता था। ऐसे भक्ति भाव को वे महत्त्व नहीं देते थे जो जन सेवा से दूर हो। बल्कि भगवान महावीर का आदर्श 'मेरी सेवा से अधिक दीन दुखियों की सेवा करना अधिक श्रेयकर हो' यही उनका जीवन ध्येय था। इसी के लिए उन्होंने स्कूल, अस्पताल का निर्माण कराया। उनका स्पष्ट उद्घोष था कि अपनी आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अनुचित ही नहीं अपितु अन्याय है- पाप है दुर्गति का कारण है। अतः वे अपने प्रत्येक गृहस्थ शिष्य को परिग्रह परिमाण वृत की मर्यादा का पालन की शिक्षा देते थे। उनका कहना था -अपने न्याय प्राप्त अधिकारों से आगे मत बढ़ो। अधिकारों से आगे बढ़ने का अर्थ है - दूसरों का शोषण करना। इससे स्पष्ट है कि उन्होंने अपने विशुद्ध ज्ञान से समाज में व्याप्त अज्ञान, मोह और द्वेष को दूर किया। अपने ध्यान से प्राप्त शक्ति से जनमानस में सेवा भाव जागृत किया। उन्होंने स्वयं लम्बी सात लम्बी पैदन यात्राएं की औश्र अपने उज्जवल जीवन व्यवहार की छाप जन मानस पर अंकित कर उनके जीवन के दुर्व्यसन दूर किए।

यह सब उनके विशुद्ध संस्कारों का परिणाम को जो कि उन्हें पूज्य माता-पिता से प्राप्त हुए थे। उनका अग्रवाल कुल गौरव सेठ गणेशीलाल जैन की धर्म परायण धर्मपत्नी श्रीमती सुखदेवी जैन से प्राप्त

हुए थे। उनका जन्म सन् 1997 में विजय दशमी के दिन हुआ था। उनका अध्ययन दिल्ली नरेला और चाँदनी चौक भगवान महावीर स्कूल में हुआ था उसी दौरान अनेक महान तेजस्वी संतों आचार्यों के दर्शन सतसंग का लाभ मिला, जिससे उनकी अंतरात्मा जाग उठी। ये लौकिक सुख भोगों से विरक्त हो साधु बनने के लिए संकल्प बद्ध हो गये और आचार्य देव पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज का पावन आर्शीवाद प्राप्त कर संत बन गये अपने तारण हार गुरुदेव पू. श्री हेमचन्द जी महाराज से सेवा भक्ति और निर्देश में अपने पूर्वज संतों की सेवा में रहते हुए अध्ययन करके जैन बौद्ध और वैदिक साहित्य का सारतत्व हृदयंगय किया।

पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराज जी महाराज की सेवा के फलस्वरुप उन्हें योग्य शिष्य श्री अमरमुनि के रुप में प्राप्त हुआ। फिर वे गुरु आज्ञा से लोक कल्याण के लिए स्वतन्त्र विचरण करने लगे। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि प्रांतों में उन्होंने बहुत धर्म प्रचार किया और लोगों को भगवान महावीर के शिक्षा सिद्धांत का बोध देखकर धर्म मार्ग अग्रसर किया उन्होंने अनेक नवयुक और युवतियों को जैन सन्यास में दीक्षित किया।

✧✧

आमंद-मोदाकर सदा,आनंदऋषि गुरुराज। अमित बोधाशुभशोध के, अतुल कलानिधि राज।।
आचार्य सम्राट की, महिमा मंडित-माल, महेन्द्रऋषि सुरभित करें, श्रमण संघ के भाल।।
युवाचार्य महेन्द्रऋषि, जन हितकर अविराम, सर्व हितङ्कर साधना, शोभा ललित ललाम।।
क्षमावंत महावीर की, क्षमा सकल गुणगान, क्षमावंत निभर्य रहे, पाये सकल सुजान।।
- पू. श्री रुपचंद जी म.

श्रमण संघ को कोहीनूर

- सलाहकार सिद्धांताचार्य पू. डॉ. श्री राममुनिजी म. 'निर्भय'

श्रमण संघीय युवाचार्य पद पर आसीन पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. का व्यक्तित्व ऐसा गरिमामय, महिमामय है जो उन्हें अन्य साधको से अलग करता है। पद पाकर मद इनसे कोसो दूर हैं। विनम्रता में साक्षात् गौतम गणधर की प्रतिमा है। ज्ञान में बृहस्पति तो दर्शन में अटल सुमेरु के उपमान हैं।

श्रमण संघ के इस कोहीनूर हीरे की पहचान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. जैसे जौहरी ने की। चने-मुरमरे बेचने वाले कुंजड़े को हीरे की पहचान नही होती। आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. सा. की अनमोल शिष्य रत्न माला के ये एक चमकते मोती है। प्रवर्तक पू. श्री कुन्दनऋषि जी म. सा. की तीखी व पारदर्शी निगाहों ने इसे परखा तथा आज कर्नाटक में जिनशासन ध्वजा को फहरा रहे हैं। स्वाध्याय ही इनका आहार है। कथनी-करनी की एकता इनका आचार है। गरीब अमीर में अभिन्नता व समरसता इनका व्यवहार है। ऐसे युवाचार्यजी को पाकर श्रमण संघ धन्य है। इनके 50वें स्वर्ण जन्म दिवस पर कोटिशः मंगल मनीषा शुभ कामना।

आपश्री मस्त रहकर अपना कार्य करते रहें परिणाम अच्छा ही रहा है, अच्छा ही रहेगा। सूर्य के समक्ष अंधकार कभी टिकता नहीं है। पुनः पुनः आपके जन्म दिवस की शुभ कामनाऐं।

✧✧

हीरक जयंती पर हर्दिक शुभकामना-समर्पणा

- साध्वी पू. श्री डॉ. चिंतन जी म.

वीतराग ध्यान साधना प्रणेता, श्रमण संघ के चतुर्थ धर्म नेता।
सर्व दुःख विमोक्षक, आगम वेता, विषय विरत इन्द्रिय जेता।।

तव चरणों में शतशः वंदन है, हीरक जयंती पर हार्दि अभिनंदन है।
सन्निधि में मिटते कर्म कंदन है, मिलती शीतलता जैसे चंदन है।।

शिवाचार्य भगवन् आपके कदम गतिमान है, शिवत्व की ओर,
मानवमन के अज्ञानतम को हरने वाले आपको स्वर्णिम भोर।।

आत्मशोधन में विद्या माँ के लाल ने किया विश्व भ्रमण,
मन तृप्त न हुआ तो ज्ञान गुरु की शरण में किया आत्म रमण।।

ध्यान धारा में अवगाहन कर पाया भेद विज्ञान का नवनीत,
देह-आत्मा भिन्न समझा घटाई देह से प्रीत।।

'कोऽहं' की गूँज से करते हैं आंतरिक चोट,
'मलोट' धरा पर अवतरित शिव कहते हैं 'स्व में लौट'।।

आचरण के पिरामिड हो भगवन आप ज्ञान के महासागर,
दर्शन दीप्ति से देदिप्यमान हो आप सद्गुण आगर।।

दिव्य भव्य व्यक्तित्व के धनी श्रमण संघ नायक,
चतुर्विध संघ के हो आत्मबोधि, सम्बोधि दायक।।

आपमें है शिशु सी सरलता, युवा सी पराक्रमता,
वृद्ध सी अनुभवता, वंदन है श्रमण संघ शास्ता।। ✧✧

अजात शत्रु महामुनि को कोटि-कोटि नमन

अनंत आस्थाओं के आयाम उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी पूज्य श्री पदमचन्द्र जी महाराज के जन्म शताब्दी पुण्य प्रसंग पर मेरा हृदय आस्था, उमंग और उल्लास से उल्लसित है। पूज्य गुरुदेव की कृपामयी प्रतिमा मेरे हृदय मन्दिर में हर क्षण विराजित रहती हैं संघीय एकता और सामाजिक संगठन के लिए पूज्य प्रवर्तक श्री के महनीय कार्य इतिहास के अक्षर आलेख हैं। उनका मधुर व्यक्तित्व हरेक को अपना बना लेता था। कटुता से वे एकान्तिक रुप से अस्पर्शित थे। उन्हें 'अजातशत्रु' कहु तो किंचित अतिशयोक्ति न होगी। जन्म शताब्दी के इस महान पर्व पर अजातशत्रु पूज्य प्रवर्तक श्री के चरण सरोजों में कोटि-कोटि नमनू!

- तपाचार्य सध्वी मोहन माला

श्रमण संघ के गौरव

– आर्या पू. डॉ. सुप्रभा जी म. 'सुधा'

भारतीय संस्कृति का शीर्ष पुरुष संत है। संत जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है – अकृत्रिमता। सन्त एक व्यक्ति नहीं, अपितु सन्त धर्म का, विश्वप्रेम का तथा विश्व मानवता का एक पावन प्रतिष्ठान है। सन्त का जीवन देश, समाज और परिवार की सीमित परिधि में बंधा नही होता **'वसुधैव-कुटुम्बकम्'** का आदर्श चिन्तन जिनमे न केवल उर्वरता लिये रहता है। वरन् सर्वथा क्रियान्वित होता है। जिनके कर्म और वाणी में अन्तराल नही होता। वे नर-रत्न सन्त पुरुष वसुधरा के सच्चे अलंकार है। सन्त का ज्योतिर्मय जीवन वस्तुतः विविध सद्गुणों के रंगो से अनुरंजित होता है। कहा भी है –

जग सुहित कर, सब अहित हर, भुत सुखद सब संशय हरै।
भ्रम रोग हर जिनके वचन, मुखचन्द्र तै अमृत झरै।।

अखिल भारतवर्षीय वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ के प्रथम युवाचार्य विद्धरेण्य, बहुश्रुत ज्ञानयोगी श्री मिश्रीमल जी म. सा. 'मधुकर' की गति, मति, वृत्ति सभी सरलता से ओत-प्रोत थे। "जहां अंतो तहा बहि" का आदर्श बोध उनके कण-कण में समाहित था। ठीक ऐसी ही अकृत्रिमता श्रमण संघीय द्वितीय युवाचार्य ध्यानयोगी श्री शिवमुनि जी म. सा. एवं तृतीय युवाचार्य उद्बुद्ध चेता श्री महेन्दऋषि जी म.सा. की है। आपका जन्म 5 अक्टूम्बर सन् 1967 को महाराष्ट्र के चाकण (पूना) ग्राम में वीर माता-पिता श्री स्वार्थीलाल जी भटेवरा जैन की धर्मपत्नी श्रीमती लीलाबाई जी जैन की कुक्षी से हुआ। प्यार से आपको सभी मंजु नाम से पुकारते थे। बचपन बहुत ही लाड़ प्यार से बीता। महामहिम प्रज्ञा प्रदीप दिव्य व्यक्तित्व के धनी श्रमण संघीय आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि जी म.सा. के सत् सान्निध्य में अति लघुवय में 3 फरवरी सन् 1982 को भागवती दीक्षा अंगीकार की। गुरु भगवन्त की पावन छत्र-छाया में तीक्ष्ण मेघा व्युत्पमप्रज्ञा बल से बहुत जल्दी ही संस्कृत प्राकृत आगम आदि विषयों का प्रगाढ अध्ययन साथ ही आपका वैचारिक चिन्तन अत्यन्त व्यापक रहा है।

आप श्री जैन दर्शन के गहन अध्येता व श्रेष्ठ प्रवक्ता तो है ही, साथ ही ध्यान, मौन चिन्तन, जप-तप, स्वध्याय अनुभव आदि प्रक्रियाओं से निःसृत प्रभावशाली प्रवचन शैली हित बुद्धि से प्रेरित एवं धर्मनिष्ठ श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करने वाली है। प्रारंभ से आपका जीवन जाग्रत रहा है। प्रथम बार इन्दौर में दर्शन लाभ मिला। हमने अनुभव किया की प्रतिभापुंज अध्यात्म सूर्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. के विचारो में जरा भी संकीर्णता, कट्टरता साम्प्रदायिकता और रूढ़ता का कोई प्रतिबिम्ब नहीं है। आप एक प्रशान्त मधुर गीतकार है राजस्थानी हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी बहुत मधुर आवाज में गाते हैं।

प्रातः स्मरणीय राजगुरुमाता पू. श्री उमराव कुंवर जी म.सा. 'अर्चना' कई बार फरमाया करते थे कि – स्वर्ण को कुन्दन बनाने के लिए एक बार अग्नि परीक्षा में से गुजरना पड़ता है तो हीरे को निखारने के लिए दो बार शाण पर चढना पड़ता है। किन्तु सन्त जीवन एक दो बार नहीं जितनी अधिक बार अग्निपरीक्षा देते है। उनका आत्मबल धीरज सहिष्णुता विनयविवेक और अधिक निखरता ही जाता है। आपके जीवन में भी बहुत उतार चढ़ाव उपस्थित हुआ, परन्तु आपश्री ने सहिष्णुता एवं विनय-विवेक का ही परिचय दिया जिससे आपके व्यक्तित्व में चार चांद ही लगे है। स्वर्ण जन्म दिवस के मंगलमय अवसर पर आपके स्वस्थ सुदीर्घ जीवन की कामना करते है। आप श्रमण संघ के गौरव एवं प्रेरणा के प्रतीक है। हृदय कें अन्तःकरण से प्रभु से प्रार्थना करते है कि आप श्री का मार्गदर्शन युग-युग पर्यन्त मिलता रहे। ✧✧

भावी अनुशास्ता - युवाचार्य भगवन्

- पू. श्री आदर्शज्योति जी म.

इस विराट विष्व में कुछ विशिष्ट आत्माऐं अरूणोदय की तरह अपने अवतरण से पूर्व ही आगमन की दस्तक दे देती है। आगत पुण्यवान संतान के जन्म से पूर्व ही माता-पिता को यह शुभ भावना हुई कि इस बार यदि पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई तो उसे हम आस्थेय आचार्य सम्राट पू. गुरुदेव श्री आनंदऋषिजी म.सा. के श्री चरणों में समर्पित करेंगे।

सौभाग्यदय हुआ और वीरपिता श्रीमान स्वार्थीलालजी तथा रत्नकुक्षिणी माता श्रीमती लीलाबाईजी के आंगन में देवापम सुंदर, आकर्षक, मनमोहक बालक भटेवरा कुल भूषण ने दिनांक 5 अक्टूम्बर 1967 को नई दुनिया में प्रवेश कर अपनी सुन्दर आंखे उघड़ी। बालसुलभ क्रिडाओ के साथ नन्हें बालक में पूर्व पुण्य उदय से संतप्रेम सत्संग सेवा करुणादि का गुण विशेष रूप से विकसित हो रहा था।

अनेक विशिष्टता लिए बालक को जननी ने 2-4 बार प्यार दुलार से भविष्य के भानू को 'महेन्द्र' नामकरण के उपरान्त भी 'मन्जू' कहा तो सर्वत्र कुमार महेंद्र मंजू नाम से प्रसिद्धि पाने लगा कारण ये था कि नन्हें बालक को माता-पिता की हर बात 'मन्जूर' होती थी। वह अपने मन मुताबिक नहीं चलता परिणाम स्वरूप छोटे-बड़ों की जुबान पर मंजू नाम अधिक चढ गया।

बालक मंजू सर्वोदयी गुणों के केंद्र (धूरी) पर ही घूमता रहा। प्रकृति पुण्य और परिवार के परिवेश में निरंतर सद्गुण विकास की दिशा में वर्धमान था। बालरूप की विराट विचारधारा थी कि मुझे भी गुरु 'आनंद' जैसा ही बनना है और इस बालहट ने 7 वर्षीय लघुवय में विराटता की संकल्पना से प्रेरित पिताश्री ने वचन प्रतिबद्धता के कारण पुत्रमोह त्यागकर बाल रवि को पूर्णता पाने के लिए गुरु चरण की शरण हेतु अपनी ममता पर अंकुश लगाकर उज्वल भविष्य के निमित्त कुशलशिल्पी सुजान सृजनहार के हाथों तराशने को सौंप दिया।

अज्ञाता की मुंडेर से समय झांक रहा था इस अनमोल अमानत उज्जवल नक्षत्र को और अल्पसमय में संकल्पबद्ध मंजू का विकल्प रहित वैराग्य विराट रूप लेता गया लेता गया। आपके व्यक्तित्व में महानता आरोपित न होकर अभिव्यक्त हुई है। आप वक्तव्य से प्रभावी और कर्तव्य से सुस्वभावी है। आपका चमकता चेहरा, उन्नत ललाट, भव्य भुजदण्ड, विशाल वक्षस्थल, बोलती मुखमुद्रा झील सी गहरी आंखे, प्रलम्ब और प्रबल देहयष्टि ऐसे समृद्ध आकर्षक प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक है।

आप गुरु आनंद की शीतल छाया पाकर धन्य थे। गुरु के ज्ञानसागर में डूबकियाँ लगा-लगाकर किमती रत्नों को जुटाते हुए अपने ज्ञानकोष को समृद्ध बनाते गये। वाणी का वैभव माँ सरस्वती की कृपा से प्रारंभ से ही उपहार रूप में मिला हुआ है। मिलन सारिता दूध+पानी जैसा नहीं अपितु दूध और मिश्री जैसी है। आपकी व्यवहार कुशलता चुम्बकवत है इसीसे प्रभावित भक्तों की भीड़ सदैव फूल पर मंडराते भ्रमर की तरह प्रेम पराग का प्रसाद पाने प्रयासरत रहती है। आपमें बालक सी सरलता युवकों सा जोश प्रौढ सी गंभीरता तो बुजुर्गों वाला अनुभव हमेशा लक्षित दर्शित होता है।

आगमों का अध्ययन, चिंतन, मनन, मंथन विरासत में मिला है। बहुमुखी प्रतिभा के आप धनी है। मधुर गायन प्रवचन पटुता तथा लेखन आदि की सर्जन शक्ति तो प्रकृत रूप से संप्राप्त है।

आपके प्रवचन जनकल्याण की एक पवित्र मंदाकिनी है जो जिनवाणी स्वरूप हिमालय से प्रवाहित होती है अनेक समस्याओं को समाधन देने के लिये उन्हें श्रावण कारण औ निवारण निश्चित ही प्रशंसनीय

है। समाधन देते हुए बच्चों में संस्कार युवाओं कर्तव्य बोध और जोश तथा बुजुर्गों में धैर्य और समता को भरते हैं इस तरह प्रवचन मन को छूने वाले आचरणीय अनुकरणीय होते हैं।

संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती भाषा पर आपका प्रभुत्व है तो वहीं न्याय दर्शन व्याकरण आपके प्रिय विषय है। हजारों-हजारों श्लोक, गाथा, कोटेशन और कई शास्त्र कंठस्थ है स्मरण शक्ति जबरदस्त है।

इसी प्रभूत प्रतिभा के तहत महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. ने आपको **'जिनशासन प्रभावक'** तो विदर्भ संघ की ओर से **'विदर्भ शिरोमणी'** और इंदौर संघ से **'प्रज्ञामहर्षि'** तथा खाचरौद संघ से **'आगम रत्नाकर',** आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.सा. की तरफ से श्रमण संघीय मंत्री तथा साधु सम्मेलन 2015 इंदौर में **'युवाचार्य'** पद पर आसीन किया गया। सच तो यह है कि आप पद से नहीं पद आपसे गरिमा पा गए।

इस तरह अपना सर्वतोन्मुखी विकास करते हुए आप ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग और यशोकिर्ती के पायदान चढते हुए जीवन के स्वर्णिम अवस्था अर्थात् **'स्वर्ण जयंति'** तक आ पहुंचे है।

'आदर्शग्रुप' की तरफ से हार्दिक मंगल कामना के साथ आप सकुशल अपनी मंजिल की ओर गतिमान रहे तथा स्वस्थ मस्त रहते हुए चतुर्विध संघ समाज का कुशल संचालन करते रहे उज्वल भविष्य की शुभ भावना।

✧✧

ध्यानाचार्य, शिवाचार्य, युगाचार्य

- **डॉ. लक्ष्मीचंद जैन,** खरगौन, (मध्य प्रदेश)

आगम ज्ञानी धई गया, वर्तमान माँ होय। थोश काल भविष्य मा, एमा भेद न कोय।।

वर्तमान के आताज्ञानी महापुरुष ध्यानाचार्य श्री शिवाचार्य जी पूज्यपाद अध्यात्म होगी युग प्रधान डॉ. शिवमुनि जी म. सा. है।

जिनका जीवन 75 वर्षों से एक अपनी आत्मा की शुद्धता में व्यतीत हो रहा है। ऐसे आचार्य शिरोमणि अपनी ध्यानावस्था में अणहद की झंकार सुनते है। देह के उस पार विदेह अवस्था का अनुभव करते हैं। शरीर की हद के बाहर आत्मका की आवाज सुनते हैं। अमृत रस का पान करते हैं कहा भी गया है

शुद्धता विचारे ध्यावे, शुद्धता में के जिकरे।
शुद्धता में स्थिर वहे, अमृत धारा बरसे।।

अमृत महोत्सव का अर्थ है जिन्होंने अपने जीवन में अमरता का रसपान दिया हो, ऐसे युगप्रधान आचार्य प्रवर के लिए शताब्दी वर्ष्ा की शुभकामनाएं। श्रभ वीरप्रभु से प्रार्थना है कि वो शतायु से ऊपर श्रमण संघ का नेतृत्व करते रहे तथा जन-जन को अपनी आत्मा को पहचानने की कला सिखाते रहे।

आगमों का संसार, अपने आपको जानो।

समहि जाणइ ते सवहि जाणइ जिसने एक अपनी आत्मा को जाना उसमो सब कुछ जान लिया, ऐसी उत्तम शिक्षा देने वाले शिवाचार्य श्रीजी हमारे विष को दूर कर हमारी शंकाओं का निवारण करते हैं ऐसे शंकराचार्य जी को नमन।

देह छलं जेनी दशा, बरते देहातीत। से ज्ञानी नां चरणमां, हो वंदन अगणित।।

।।जन्म-दिवस पर श्रद्धेय गुरुवर।।

- पू. श्री पदमावती जी म.

तू है इंसान मगर दुनिया तुझे भगवंत कहती है, पतित पावन महायोगी, महाविद्धान कहती है। तुझे दीनों-दुःखी अनाथों का सुखद वरदान कहती है, तेरी पलकों के नीचे बस-दया की खान रहती है।

मुझे गौरव महसूस होता है कि इस चाकण (पुणे) की माटी की गजल पुण्यवाणी रही होगी। जहां पर गुरु महेन्द्र का जन्म हुआ। उस सयम माता प्यारी देवी और पिता स्वार्थीलाल जी का आशियाना महक उठा होगा, खिल खिला उठा होगा। आज आपके जन्म दिवस के शुभ अवसर पर मैं अबोध साध्वी कितना भी गुणगान करूं, कितनी भी स्तुति करूं, हे गुरुदेव मुझे वह सब कम ही लगती है।। सारे जहां में हमने गुरु आनंद आपका कमाल देखा है, गुरु महेन्द्र भी आये इन चरणों में हमने होता निहाल देखा। कृपा तेरी हुई हासिल जिसको भी इस जग में, हमने तो उसी को यहाँ खुशहाल हो देखा।।

गुरुदेव! के गुणों का क्या वर्णन करु, गुरुदेव के गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना। इस विशाल सागर में गागर भरना है, अब आगे शयद मैं गुरुदेव के गुणों का बखन ही नहीं करू पाऊं, फिर भी अंतर दिल से यही कहना चाहूंगी।

हे गुरु आपके उपकारों को जीवन का उपहार माना है मैंने, आप श्रमण संघ के सिरमौर हैं। आपकी कृपा सम्पूर्ण श्रमण संघ पर बरसती रही है। आपने स्वयं जाग कर हमें जगाया है। स्वयं संभल कर हमें संभाला है, स्वयं चलकर हमें चलना सिखाया है। मैंने यह प्रत्येक क्षण महसूस किया है। आपके चहरे के तेज के आगे तो सूर्य का तेज भी कम लगता है।मेरी लेखनी में वो बल कहां जो गुण आपके प्रकाश करूं..
अनंत गुणों के आकार भगवान कृपा हो ऐसी...मैं भी विकास करूं।

✧✧

भावी अनुशास्ता - युवाचार्य भगवन्

- पू. श्री प्रियदर्शना जी म.

पुण्य भूमि है चाकण नगरी जहां आपने जन्म है पाया
स्वार्थीलालजी व लीलाबाई का घर आंगन महकाया।
सुसंस्कारी भटेवरा परिवार में आप सबके दुलारे
नटखट बचपन में आप बने सबकी आंखो के तारे।
भविश्यवेत्ता गुरु आनंद पधारे बालक का भविष्य जान लिया
तेजस्वी बालक महेन्द्र को शिष्य रूप में ले ही लिया।
उदार हृदय दम्पत्ति ने गुरु आज्ञा को तरंत ही मान लिया
अपने हृदय के टुकड़े का गुरु चरणों में दान दिया।
गुरु के सानिध्य में शिष्य का जीवन घड़ने लगा
धीरे-धीरे विनय सहित ज्ञान आपका बढ़ने लगा।
मात्र 14 वर्ष की उम्र में संयम रत्न को आपने पा लिया
मधुर व्यवहार से गुरु हृदय में अपना स्थान बना लिया।
बड़ी लगन से पढ़ाई करके आगमों का गहन अध्ययन किया
संस्कृत प्राकृत आदि कई भाषाओं का आपने ज्ञान किया।
अंग्रेजी मराठी और गुजराती भाषाओं के आप बने विशेष ज्ञाता
ऐसे प्रतिभा पुंज को देख देख भक्त हृदय अति हर्षाता।
प्रवचन शैली ऐसी प्रभावक मंत्र मुग्ध हो जाते श्रोता
शास्त्रोक्त उदाहरणों का सुंदर वर्णन सबके मन को लुभाता।
मधुर स्वर लहररी में जब गाते आप कोई प्यार भजन
सुनकर खिल जाता है श्रोताओं के मन का उपवन।
हर भक्त चाहे कृपा आपकी ऐसा है आपका तेजस्वी आभामंडल
हर कोई आपका बनना चाहे क्योंकि आप हो व्यवहार कुशल।
समर्पण सेवा और सरलता से युवाचार्य पद है आपने पाया
चारो संघ के भावी अनुशास्ता ने संघ गौरव है बढाया।
ज्ञान के रत्नाकर हो आप हम सब करते हैं वंदन
स्वर्ण जयंति के अवसर पर 'प्रियकल्प' करती अभिनंदन।
दीर्घायु स्वस्थ जीवन हो आपका मिले खुशियाँ ही खुशियाँ
जन्म-जयंती पर गुरुवर 'प्रियकल्प' की हार्दिक बधईयाँ।

मृत्यु क्या है?

– **अविनाश चोरडिया जैन,** प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

मृत्यु का अर्थ है भौतिक शरीर से आत्मा का जुदा होना है। मृत्यु नये और बेहतर जीवन का एक प्रारंभिक बिन्दु बन जाता है। यह जीवन के उच्च रुप का द्वार खोलता है। यह संपूर्ण जीवन का केवल एक प्रवेशद्वार है। जन्म-मृत्यु माया के मायाजाल हैं। जन्म लेते ही मरने की शुरुआत हो जाती है और मरते ही जीवन की शुरुआत हो जाती है। जन्म और मृत्यु इस संसार के मंच पर प्रवेश करने और बाहर जाने का द्वार मात्र है। वास्तव में ना तो कोई आता है और ना ही कोई जाता है। केवल ब्रह्म और अनंत का ही अस्तित्व होता है।

जैसे आप घर से दूसरे घर में जाते हैं, वैसे ही आत्मा अनुभव प्राप्त करने के लिए एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। जैसे मनुष्य पुराने कपड़े छोड़कर नए कपड़े पहनता है, बिलकुल वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। जीवन एक कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है। यह निरंतर चलती ही रहती है। मृत्यु एक जरूरी घटना है जिसका अनुभव हर आत्मा को भविष्य में विकास करने के लिए करना है। एक विवेकी और बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी मौत से नहीं डरता है।

हर आत्मा एक चक्र है। इस चक्र की परिधि कहीं भी खत्म नहीं होती लेकिन इसका केन्द्र हमारा शरीर है। तो फिर, मौत से क्यों डरना चाहिए? परमात्मा या सर्वोच्च आत्मा मृत्युरहित, कालातीत, निराधार और असीम है। यह शरीर, मन और पूरे संसार के लिए एक केन्द्र है। मृत्यु केवल भौतिक शरीर को प्राप्त होती है, जो पाँच तत्वों से बना है। मृत्यु शाश्वत आत्मा को कैसे मार सकती है जो समय, स्थान और कर्म से परे है? अगर आप जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाना चाहते हैं तो आपको शरीरविहीन होना होगा। शरीर हमारे कर्मों का परिणाम है। आपको कोई भी कार्य फल की उम्मीद किए बिना ही करना चाहिए। अगर आप खुद को रागद्वेष या पसंद-नापसंद से मुक्त कर लेते हैं, तो आप खुद को कर्म से भी मुक्त कर लेंगे। आप केवल अहंकार को ही खत्म कर खुद को 'राग' और 'द्वेष' से मुक्त कर सकते हैं। जब अविनाशी ज्ञान के द्वारा अज्ञानता का अंत हो सकता है तो आप अहंकार का भी विनाश कर सकते हैं। इसलिये इस शरीर के जड़ का कारण यह अज्ञानता है। जिसने भी उस अमर आत्मा का एहसास कर लिया जो सभी ध्वनि, दृश्य, स्वाद और स्पर्श से परे है, जो निराकार और निर्गुण है, जो प्रकृति से परे है, जो तीन शरीर और पाँच तत्वों से परे है, जो अनंत और अपरिवर्तनीय है, उसने खुद को मौत के मुँह से आजाद कर लिया।

जीव या व्यक्तिगत आत्मा अपने कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए और अनुभव प्राप्त करने के लिए अनेक शरीर धारण करती है। वो शरीर में प्रवेश करती है और फिर जब वह शरीर जीने लायक नहीं रहता, तो उसे त्याग देती है। वह फिर से एक नए शरीर का निर्माण करती और पुनः वही प्रक्रिया दोहराती है। यह प्रक्रिया स्थानांतरगमन कहलाती है। किसे नये शरीर में आत्मा का प्रवेश करना जन्म कहलाता है। शरीर से आत्मा का अलग हो जाना मृत्यु कहलाता है। अगर शरीर में आत्मा न हो तो वह शरीर मृत शरीर है और इसे प्राकृतिक मृत्यु कहते हैं। एककोशकीय जीवों के लिए प्राकृतिक मृत्यु अज्ञात है। जब पृथ्वी पर ऐसे जीवों को जीवन मिलता है तो उनकी मृत्यु अज्ञात होती है।

यह घटना केवल बहुकोशकीय जीवों के साथ ही होती है। प्रयोगशालाओं के शोधों से पता चला है कि किसी के जीवन की समाप्ति के बाद भी उसके अंग काम कर सकते हैं। मृत्यु के बाद भी कई महीनों तक सफेद रक्तकण शरीर में जीवित रहते हैं। मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। यह महज एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की समाप्ति है। जीवन संसार पर विजय पाने के लिए चलती रहती है। यह तब तक चलती रहती है जब तक यह अनंत में विलीन नहीं हो जाती। ✧✧

अभिग्रहधारी पूज्य गुरुदेव पू. श्री वेणीचन्द जी म.

- औंकार सिंह सिरोया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

दिव्य तपो धनी पूज्य गुरुदेव श्री वेणीचंद जी म.सा. के जीवन का कण-कण तप की दिव्य तेजस्वी किरणों से प्रकाशमान था। तप ही उनके जीवन का प्राण था, पूज्य गुरुदेव ने अन्तःकरण को तेजस्वी बनाने के लिये तपदीप प्रज्जवलित किया गया था। बेले-बेल और चोले की तपस्या तो की ही थी लेकिन जीवन के अंतिम 29 वर्षों तक निरंतर छाछ और पानी के आधार पर जीवन गुजार दिया सभी पाँचों विगय को त्याग दिया वह अभिग्रहधारी अर्थात् दृढ़ संकल्प लेकर चलते थे और अभिग्रह पूर्ण न होने पर एक महीने, डेढ़ महीने से अधिक समय तक छाछ और पानी भी ग्रहण नहीं करते थे।

आपका जन्म पहुना, चितौड़गढ़ (राजस्थान) में वि. संवत् 1898 चैत्र शुक्ल त्रियोदसी को हुआ तथा नाम रखा वेणीचंद। आपके पिताजी चन्द्रभानजी खमेसरा एवं माताश्री कमला देवीजी। माता-पिता के देवलोक गमन पर एकांत में बैठकर संसार की असारता पर चिंतन करने लगे मन में वैराग्य का भाव जागृत हुआ उनकी सगाई उनके चचेरे भाई ने पहुना के कुकड़ा परिवार की कन्या से तय कर दी। रास्ते में बैल लड़ते जा रहे थे, वेणीचन्द जी ने कहा बहन हट जाओ पीछे से बैल लड़ते आ रहे हैं जब वेणीचन्द जी को मालूम पड़ा कि भावी पत्नी को उन्होंने बहन कहकर पुकारा तो चिंतन में पड़ गए कि जिसको मैंने बहन कह दिया उससे शादी कैसे कर सकता हूँ, जिस दिन शादी होनी थी ठीक उसी दिन विक्रम संवत् 1920 आषाढ़ सुदी नवी के दिन माण्डलगढ़ तालाब की पाल पर विशाल वट वृक्ष के नीचे बड़ी धूमधाम से गुरुदेव पूज्य श्री पन्नालापल जी म. ने दीक्षा प्रदान की। आचार्य प्रवन श्री पन्नालाल जी के विक्रम संवत् 1938 में देवलोक गमन पर मुनि वेणीचन्द जी म. कठोर तपस्या में लग गए। शून्य खण्ड़हरों में, शमशान में, गहन वनों में तथा गुफाओं में ध्यान करते थे सिंह जैसे हिंसक प्राणी भी उनके चरण वंदन करते थे।

गुरुदेव अभिग्रह (संकल्प) लेकर ही गोचरी लेने के लिये निकलते अभिग्रहण पूर्ण होने पर ही गोचरी लेते इनके अभिग्रह भी विस्मयकारी होते थे। विक्रम संवत् 1941 में गुरुदेव ने अभिग्रह धारण किया कि तीन साडू एक साथ 5 लड्डू बहराए तो आहार लेना। नहीं तो छाछ पानी के आधार पर रहना। वह अभिग्रह दो वर्ष दो दिन में पला विक्रम संवत् 1959 बनेड़ा (भीलवाड़ा) में गुरुदेव ने अभिग्रह लेकर मौनूर्वक ध्यानस्थ्य हो गए- तीन महीने दस दिन तक मौन धारण कर खड़े रहे। राज परिवार की चार पीढ़ी - गोविन्द सिंह जी, अक्षय सिंह जी, अमर सिंह जी और प्रताप सिंह जी गुरु चरणों में पहुंचे। गुरुदेव से बैठने के लिये निवेदन किया। अक्षय सिंह जी आवेश में आकर बोल पड़े कि वेण्या बैठणों है तो बैठ जा नीतर म्हारा गांव सू बहार निकल जाय। गुरुदेव का अभिग्रह पूर्ण हुआ। ऐसे अनेक अभिग्रह आपके जीवन में गठित हुए। एक बार नीमच जिले

में जाट गांव में पधारे सामने एक प्रज्ञा चक्षु भी आ रहे थे, गुरुदेव ने कहा लो आँख खोलो और दर्शन कर लो इसी समय रोशनी आ आई श्वेत वस्त्रधारी संत नज़र आने लगे।

विक्रम संवत 1965 का वर्षावास शाहपुरा की पुण्य धरा पर हुआ। वर्षावास के बाद आपका स्वास्थ्य नरम हो गया। श्रावक-श्राविकाओं के सामने गुरुदेव ने कहा अब मेरा जीवन दीपक बुझने वाला है। अतः मैं संघ की साक्षी से यावज्जीवन के लिये संथारा ग्रह करता हूँ। विक्रम संवत् 1965 पोष कृष्णा चवदस के दिन महायोगीराज दिव्य तपोधनी स्वर्गवासी हो गए। चन्दन की चिता पर पार्थेव देह जलकर राख हो गया लेकिन चोल पट्टा (अधोवस्त्र) का एक तार भी नहीं जला। यह चमत्कार देखकर जनता विस्मित एक चकित हो गई। ऐसे घोर तपस्वी, अभिग्रहधारी पूज्य श्री वेणीचन्द जी म. का जितना गुणगान करें उतना कम है। उनके रणों में कोटि-कोटि नमन्। ✧✧

जैन कॉन्फ्रेंस - आजीवन सदस्यता शुल्क की सूचना

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की **राष्ट्रीय प्रबंध समिति, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति, वार्षिक साधारण सभा** का आयोजन **श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शिवाचार्य समवशरण, अभय प्रसाल, रेस कोर्स रोड, इंदौर (मध्य प्रदेश)** में **दिनांक 17 सितम्बर, 2017** को **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन** की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सभा में सर्वसम्मति से गहन विचार-विमर्श एवं प्राप्त सुझावों के आधार पर निर्णय लिया गया कि जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यता ग्रहण करने वाले भाईयों-बहनों के लिए आवश्यक निर्धारित शुल्क में बढ़ोत्तरी की जाये। सभाओं में सर्वसम्मति से पारित हुये प्रस्ताव के पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदयजी ने आजीवन सदस्यता शुल्क में बढ़ोत्तरी किये जाने की घोषणा करते हुए सदन में कहा कि **दिनांक 1 अप्रैल, 2018 से आजीवन सदस्यता शुल्क** में बढ़ोत्तरी लागू हो जायेगी, जोकि इस प्रकार से है:-

श्रीसंघ/संस्थागत/वाचनालय .....रु. 750/-
व्यक्तिगत.....रु. 1500/-
पति-पत्नी .....रु. 2500/-

(पति और पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य हैं तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने हेतु रुपये 1000/- सदस्यता शुल्क निर्धारित की गई है।)

उपरोक्त प्रस्ताव को सदन के सदस्यों ने सर्वसम्मति से हर्ष-हर्ष की ध्वनि के साथ पारित करते हुए अपनी अनुमोदना प्रदान की। अतः सभी गणमान्यजनों से विनम्र निवेदन है कि उपरोक्त पारित प्रस्ताव को **दिनांक 1 अप्रैल, 2018** से लागू समझते हुए जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। इन्हीं शुभ-भावनाओं के साथ ...

मोहनलाल चोपड़ा जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
जैन कॉन्फ्रेंस

वचन सिद्धयोगी 'श्रमण सूर्य मरुधर केसरी मिश्रीमल जी म.

- **अशोक कुमार धोका,** राष्ट्रीय मंत्री, ज्ञान प्रकाश योजना

वचन सिद्ध योगी, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, श्रद्धा के केन्द्र, दया के देवता, सन्मार्ग दर्शक, श्रमण संघ की ठाना, संगठन प्रेमी, महाउपकारी आस्था के आयाम, महान आशुकवि, श्रमण संघीय प्रवर्तक, श्रमण सूर्य मरुधर केसरी, पूज्य गुरुदेव, श्री मिश्रीमल जी म. के नाम का स्मरण करने मात्र से मन मे शुद्ध एवं पवित्र भाव प्रवाहित हो जाते हैं। ऐसे महान संत की जन्म जयंती एवं दीक्षा शताब्दी वर्ष सन 2017-2018 के पावन प्रसंग पर आप और हम सभी मिलकर भव्य आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

हमारा श्रद्धांजलि देना तभी सार्थक होगा जब हम गुरु भगवंत के गुणों के गुणग्राह्यी बने। जीवन में उनके बताये सन्मार्ग का अनसरण करें औपचारिकता नहीं अनुष्ठान करें। पूज्य गुरुदेव के अरमान इस प्रकार थेः-

नशा मुक्त संसार होः- आपका ध्येय रहता था कि कोई भी व्यक्ति नशा नहीं करे। आपके प्रवचनों से ओत-प्रोत होकर जैन जैनेत्तर नशा मुक्ति की ओर सहज भाव से अग्रसर होकर प्रतिज्ञा लेते थे। एक-एक व्यक्ति से समान और समाज से संसार को नशा मुक्त आपका लक्ष्य था। आपने व्यसनों के दुष्परिणाम बताते हुए कहा किः-

1. जुआ लोभ का बच्चा है। n2. माँस मनुष्यों का नहीं राक्षसों का भोजन है। 3. शराब की एक-एक बूंद जहर की बूंद है। 4. वेश्या वृति स्त्री जाति का कलंक एवं पुरुष का कोढ़ है। 5. शिकार मनुष्य का जंगलीपन है। 6. ब्रह्मचर्य की साधना सोना है। 7. चोरी मानसिक रुप से दुर्बल एवं आत्म ग्लानि की निशानी है।

स्वस्थ्य समाज होः- आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण के सतत प्रहरी एवं हिमायती मुनिश्री अपने उपदेश, संदेश एवं प्रेरणा से अनेक स्थानों पर शिक्षा, चिकित्सा और साधर्मी वात्सल्य के क्षेत्र में कई संस्थाओं का निर्माण हुआ जिसका उपयोग आज जैन जैनेत्तर समाज कर रहे हैं।

संघ समाज में संगठन एवं प्रेमः- आपश्री समाज में संगठन एवं एकता के बड़े पक्षधर सदैव ही रहे। सम्प्रदायवाद के विरोधी थे - अन्य सम्प्रदाय को शरीर का अलग-अलग अंग मानते थे। आपका मानना था हर सम्प्रदाय में कोई न कोई विशेषता होती है और हमें उसको ग्रहण करनी है संगठन प्रेम की खातिर आपको कभी पद लोलुपता नहीं रही। श्रमण संघ के निर्माण में आपकी सोच 'मील का पत्थर' साबित हुई। आपके दृढ़ संकल्प से ही आज वटवृक्ष रुपी **'श्रमण संघ'** का संगठन हमारे लिये वरदान साबित हुआ है।

सादा जीवन उच्च विचार के हिमायतीः आपका जीवन सादगी की प्रतिमूर्ति था। आज के चकाचौंध वाले कार्यक्रमों के विपरीत आपकी सादगीमय ढंग से सोजत सिटी में एक वटवृक्ष के नीचे पूज्य गुरुदेव बुधमल जी म. की पावन निश्रा में हुई। आपका जीवन हर पल एवं हर पहलू से सादगीमय था। आप सदैव खादी ही पहनते थे। आप संदेश देते थे कि मनुष्य सात्विक एवं सुसंस्कारी बनकर कही भी सुखी, समृद्ध एवं सफल हो सकता है।

पूज्यश्री जैसे मुर्धन्य संत जिनकी वचन सिद्धि के बारे में हर व्यक्ति जानता है। आपका जन्म पाली की धन्य धरा पर हुआ एवं दीक्षा संवत् 2075 'अक्षीय तृतीया' वैसाख सुदी 3 को सोजत सिटी में हुई। जिसे 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। अतः हमारा कर्त्तव्य, धर्म एवं जिम्मेवारी बनती है ऐसे महान संत की दीक्षा शताब्दी वर्ष सन 2017-18 को आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित कर गुरुजनों में अर्ध्य देने एवं कृतज्ञता पूर्वक गुरुदेव के बताये मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन को सफल बनाये।

दीक्षा शताब्दी वर्ष का आगाज तो 'अक्षय तृतीया' को शेरे राजस्थान प्रवर्तक पू. श्री रुपचंद म. ने पूरे देश में वर्षीतप करने का आव्हान के साथ ही कर दिया था। वर्षीतप के पारणे सन 2018 'अक्षय तृतीया को राष्ट्रीय स्तर पर सोजत सिटी गुरुदेव की (हृदय एवं दीक्षा स्थल) के श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति के प्रांगण में मनाने हेतु घोषणा की थी शेरे राजस्थान के आव्हान के बाद अनेक संत-सती वृंद्ध के साथ श्रावक-श्राविकाओं के वर्षीतप की तपस्या गतिमान है।

मैं अपने परिवार एवं कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से महान चरित्र आत्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए वंदन करता हूं एवं सभी वर्षीतप आराधकों की सुख सता पूछते हुए सफल आध्यात्मिक एवं संयम जीवन की मंगल कामना करते है। जय जिनेन्द्र!

✧✧

सत्य में होती है बड़ी शक्ति

महात्मा कबीर जो एक जुलाहे के घर में पले थे। एक दिन अपने घर में बैठे-बैठे रुई धुन रहे थे। उनके पास रुई का ढ़ेर लगा हुआ था। तभी अचानक एक आदमी उनके घर में घबराया हुआ आया और कबीर जी से प्रार्थना करने लगा, मुझे बचा लीजिए। मैं सही में बेकसूर हूँ। पुलिस चोर होने के संदेह में मेरे पीछे पड़ी हई है। कृपया करके मुझे जल्दी से कहीं छिपा दीजिए, वरना मैं बेगुनाहगार पकड़ा जाऊंगा। कबीर ने आगन्तुक के चेहरे के भावों को पढ़कर ही उसकी बेगुनाही का अंदाज लगाया और तुरंत ही उसे रुई के ढ़ेर में छिपा दिया और स्वयं अपने कार्य में लग गए। तभी पुलिस के दो सिपाही वहाँ आए और कबीर से चोर का पता पूछने लगे। एक सिपाही बोला यहाँ कोई चोर तो नहीं आया। कबीर ने सहज़ भाव से जवाब दिया कि चोर तो रुई के ढ़ेर में छिपा हुआ है।

पुलिस ने सोचा कबीर उनसे मजाक कर रहे हैं, कदाचित चोर यहाँ आया ही नहीं, और वे वहाँ से खाली लौट गए। कुछ देर बाद ही वह आदमी रुई के ढ़ेर से बाहर निकला और कबीर से कहने लगा कि आपने तो मुझे पकड़वा ही दिया होता। आपने सिपाहियों को मेरे रुई के ढ़ेर में छिपने का क्यूं बता दिया? कबीर ने कहा कि इसलिए कि सत्य में बड़ी शक्ति होती है, सत्य को कोई आँच नहीं। सच बोलने वाले का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, यह सुनकर आगन्तुक खुश होकर कबीर जी को दुआ देते हुए अपने घर को चला गया। ✧✧

हृदय के भाव - युवाचार्य के नाम

अभिनंदन हो जन्म दिन का, युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि म.सा. का।
भीतर बाहर एक है स्वभाव, आशीष पाया आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. सा. का।।
नंदनवन खिलाया भटेवरा परिवार में, पिताश्री स्वार्थीलाल जी का नाम चमकाया है।
दयामय मातोश्री लीलाबाई से, सुंस्कारों को युवाचार्य ने अपनाया है।।
नतमस्तक है और रहेगा श्रमण संघ सारा। नमस्कार मंत्र के तृतीय पद के बने अधिष्टाता आप,
होगी जय जयकार जगत में आपकी आचार्य श्री शिवमुनि जी के बने प्रतिष्ठाता आप।
जहाज समान है श्री महेन्द्रऋषि वर, भव्य जीव से आय रे प्राणी,
नत हो अनंत जिनेश्वरों को फिर भी बेड़ा पार लगाया रे प्राणी।।
महान है संयम साधना गुरुवर आपको जीवन भर करना निरतिचार पालन आप,
दिन दुगुनी रात चौगुनी हो उन्नति आपको, श्रमण संघ की धुराफे बनना धुरंधर आप।
नवनवीन कल्पनाओं से निखारना श्रमण संघ को।
नयी आस से देख रहा है, जगत आपको।।
'कार्मणेवाधिकारसो मा फलेषु कदाचन, गीता की यह उक्ति प्रात हो आपको।
प्रकाश बोरा की ये शुभकामनाएं, करना जतन गुरुवर हृदय में
परेश दिप्ती की चिरागमय रुचि, संजाये रखना गुरुवर नयन में।

- प्रकाश झुंबरलाल बोरा जैन, कार्यकारिणी सदस्य. जैन कॉन्फ्रेंस

पश्चाताप

जीवन नकारात्मक सोच से जिया - अब सकारात्मक सोच आ गई।
जीवन अधर्म से जिया - अब धर्म की ज्यो जाग गई।।
जीवन द्वेष, ईर्षा, हिंसा में बिता, अब दया, करुणा, अहिंसा के भाव आ गये।
जीवन प्रर्यन्त छल, कपट, क्रोध आक्षेप अब पश्चाताप के भाव आ गये।
जीवन में विनय, विवेक, सेवा से वास्ता नहीं, आज तप, त्याग, परमार्थ में रुचि आ गई।
भवन भर ज्ञान, दर्शन चारित्र का ढ़ोंग किया अंत में सब गुण शुभभाव जाग गये।
या यू कह दूं शुभ भाव आते ही - जीवन के अंतिम दौर में जीने का ढंग आ गया,
आनंद आ गया, अब वक्त मांगत हूं - तब मृत्यु का समय आ गया।
जब तक जो जीया, उसी को ढंग से जी लेना था अब पश्चाताप की घड़ी आ गई।
सारी उम्र नादानी में कटी जहर पिया-पिलाया अब अमृत पीने की लालसा जागी।
जब समय का चक्र अनवरत चलता रहा - जब पीने-पीलाने का वक्त न बचा।
मानाकि जीने की कला ना सीखी पर मौत की तैयारी अच्छी की है।
पतझड़ के पूर्व बसंत, संत, महंत अरिहन्तों, सिद्धों का शरणा
अंत में संथारे (पण्डित मरण) पूर्व मृत्यु महोत्सव देहदान।
पश्चाताप व शुभभावों से - सब पाप कर्म बह जाये करते हैं
नर्मदा अमरकंटक से निकल ओंकारेश्वर आ जाती है।

- राजेन्द्र काठेड़, नागदा (मध्य प्रदेश)

श्रमण संघीय उजियारी

- विनय जैन, देवबंदी

युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि की, संयम गाथा सुखकारी,
जब, तप, संयम-ज्ञान-ध्यान रत, रोम-रोम से बलिहारी... श्रमण संघीय उजियारी।।

पाँच अक्टूबर सन् सड़सठ को, चाकरण ग्राम में जन्माये, स्वार्थीलाल पितु, माँ लीलाबाई के तन-मन हर्षाये।।
भटवेरा कुल दीप पाकर, परिजन-पुरजन पुलकाये। महेन्द्र-मंजु' नाम रखाया, आनदं मंगल घन छाये।
थाली बाजी, बंटी मिठाई, अंगना महकी फुलवारी... श्रमण संघीय उजियारी।।

बचपन से हो जग-धंधों से दूर-दूर हो रहे सदा, धर्म ध्यान, गुरुवर-भक्ति में, पूर-पूर ही रहे सदा।
कौन हूं मैं? अरु कहां से आया? कहां पै मुझको जाना है? इन अबूझा प्रश्नों के उत्तर, सद्-गुरु पाकर पाना है।
चौरासी के बंधन टूटें, भव-भ्रमणा दुष्वारी... श्रमण संघीय उजियारी।।

पंद्रह-वर्षीय किशोर वय में, मोह-माया बंधन तोड़े, कोऽहम-कोऽम, सोऽहम-सोऽहम, स्व-चिंतन-मंथन मोड़े।।
सात बियासी तीन फरवरी, पूना में जिन-दीक्षा ली। आचार्य आनंदऋषि से, जिन-आगम की शिक्षा ली।।
गुरु आज्ञा सेवा भक्ति में, अपनी सब सांसें वारी...श्रमण संघीय उजियारी।।

हिन्दी मराठी संस्कृत प्राकृत, अंग्रेजी राजस्थानी, अन्य अनेकों भाषा सीखीं, सिद्ध हस्त हैं गुजराती।।
'आनंद के स्वर' आनंद-सरगम गुरुवर आनंद प्रसादी। सरस्वती माँ के वरद्-पुत्र ने, नव आनंदी निधियाँ दीं।
प्रवचन-पटु है, मधुरिम-गायक, ज्ञान ध्यान मंगलकारी... श्रमण संघीय उजियारी।।

शिवाचार्य ने श्रमण-संघीय-मंत्री पद का भार दिया। कुंदनऋषि ने जिनशासन-प्रभावक कह बहुमान किया।
इंदौरी-साधु-सम्मेलन, युवाचार्य सम्मान मिला। श्रमण-संघीय-उपवन महका, जिन-शासन-उद्यान खिला।।
आत्म-आनंद-देवेन्द्र-भगवन, सुरपुर में हर्षित भारी... श्रमण संघीय उजियारी।।

श्रमण-संघ के नित नव-आशा, प्रेम-प्रयार के फूल खिले। मंगल-मैत्र रहे मनों में, बिछड़े भी खुद आन मिले।।
नई चेतना, नई भावना, नई उमंगें जागी है, शिवाचार्य की ध्यान-साधना के अनुपम-अनुगामी हैं।।
युवा शक्ति, नवजोश-होश से, गुरुचरणन वारी-वारी... श्रमण संघीय उजियारी।।

श्रमण-संघ की आशा पूरो, ज्ञान-ध्यान-ममता पूरो। जिनशासन का ध्वज फहराओ, शिवाचार्य सपना पूरो।
बने 'अहिंसा-दूत' सभी अब, ये ही अलख जगानी है, 'ध्यान-दूत' बनकर सबको ही, आत्म-ज्योत जलानी है।।
यही 'विनय' है, ऋषि हितेन्द्र सब, बने रहे स्व-हितकारी... श्रमण संघीय उजियारी।। ✧✧

आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म. की 86वीं जन्म तिथि और धनतेरस

– अशोक खिंवसरा कोठारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

वीर भूमि मेवाड़ केवल वीरों एवं बांकुरों की जन्मभूमि ही नहीं रही अपितु भक्ति के क्षेत्र में भी इस पावन धरा का नाम आज भी दिगदिगन्त हैं हर धर्म हर समाज में महापुरुषों की यह खन रही है। जैन धर्म के महान आचार्यों के रुप में आचार्य पू. श्री गणेशाचार्य, श्री नानेश एवं आचार्य पू. श्री देवेन्द्र जी म. सहित अनेक महान संतों ने इस धराधाम को पावन कृत्यों से पावनं ही नहीं किया अपितु सदा-सदा के लिए ख्यात नाम दिया है। इसी क्रम में आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म. जो श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर के रुप में ख्यात नाम है। अद्भुत व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी हैं। महापुरुष ऐसे ही नहीं बन जाते हैं। अनेक संघर्षों से अपने आपको रूबरू करते हुए इस पद पर पहुंच पाते हैं। आसान नहीं है यह डगर मंजिल कैसे मिलेगी। **'चलते रहो सदैव जगत में चलते रहो निरंतर। श्रम से जा थकता न कभी है पाता सिद्धि वही नरवर।।**

इसीलिए नर से नारायण बनने के लिए सिद्ध स्वरुप पाने के लिए निरंतर जीवन को तपाते रहो, निश्चित रुप से मंजिल मिलेगी। ऐसे ही महापुरुष महान आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री ख्यात नाम उदयपुर मे वर्डिया परिवार में संवत १९८८ कार्तिक कृष्णा-१३ (धन त्रयोदशी) को जन्म बालक का नाम धन्न अदभुत संयोग, धनतेरस धन्ना को धन्ना सेठ बना गई। सेठ वो नहीं जिसके पाय धन सम्पदा है, इससे भी बढ़कर ज्ञान, दर्शन चारित्र की वह सम्पदा जो किसी भाग्यशाली पुण्य आत्मा को मिलती है। वह धन्ना को प्राप्त हो गई एवं कालान्तर में वे आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुनि म. बन गए। लघुवय तीव्रबुद्धि बालक का गम्भीर सोच हो गया, सोया हुआ बालक गहन निद्रा अर्ध रात्रि के बाद का समय एक अद्धितीय स्वप्न एक मधुर आवाज 'उठो धन्ना और बालक की जागृत अवस्था देख भव्य आकृति मुख पर मुखवस्त्रिका, हाथ में रजोहरण और तत्काल ही वह दिव्य आकृति लुप्त हो गई। बालक ने सोचा क्या स्वप्न है? मैं प्रातःकाल स्थानक में जाकर महाराज श्री से पूछूंगा। सुबह बालक उठा और सीधा स्थानक में पहुंचा। 'आओ धन्ना' सामने देख वहीं मुखाकृति जो रात्रि स्वप्न में देखा था। अब क्या पूछता स्वतः ही जवाब मिल गया और बालक धन्न अपने आराध्य के चरणों में समर्पित हो गये।

वे थे उपाध्याय पू. श्री पुष्करमुनि जी म.। बालक के ज्ञान ध्यान सिखना प्रारंभ किया, कुशल बुद्धि पहले थे। मात्र 9वर्ष की अल्पायु में वि.स. 1997, 1मार्च, 1941को भी पुष्करमुनि जी म. के सान्निध्य में संयम अंगीकार कर लिया। धन्य है ऐसी मुमुक्षु आत्माएँ मात्र 9वर्ष की उम्र में खेलने खाने की। एवन्ता मुनि की भी यही उम्र रही होगी। वे गणधर गौतम की अंगुली पकड़कर प्रभु महावीर के चरणों में पहुंच गये एवं धन्ना नींद में उठकर गुरु चरणों मं पहुंच गये, ऐसा ही प्रसंग आचार्यश्री नानेश की सुशिष्या महासतीवर्या श्री मनोहरकंवर जी म., महासतीवर्या श्री पानकंवर जी मत्र का उदयपुर का है। भक्ति एवं संयम में ऐसी रमी कि 108 पुण्य आत्माओं को इस पथ पर आरुढ़ किया। भक्ति का रंग तो ऐसा ही होता है। मुनि बनने के साथ ही जीवन निर्माण का मार्ग अनेक शास्त्रों का अध्ययन, अनेक भाषाओं का ज्ञान यथा चूर्णि, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, मराठी ऐसा ज्ञान जैसे ये भाषाएं आपको अधिकार स्वरूप मिली जो वास्तविक जीवन की सफलता तो इसी में है। अनेक विषयों पर ऊंची साहित्यिक भाषा में तल स्पर्शी लेखन, आगम, उपनिषद, वेद, संस्कृत, व्याकरण, त्रिपटीक अनेक विषयों का गहन अध्ययन जो किसी कॉलेज में नहीं गये न किसी हाई प्रोफेशनल यूनिवरसीटी की डिग्री ही हासिल की। इन सबके बावजूद भी उच्च स्तरीय साहित्यिक ज्ञान मानो यह गुरु भक्ति का आर्शीवाद था।

सन 1992 को उदयपुर की इस पुण्य धरा पर हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में आपको आचार्य पद दिया। आचार्य पद संघ का सर्वोच्च पद अनेकों जिम्मेदारियों से भरा होता है जिसमें सभी को संतुष्ट नहीं रख सकते किन्तु आचार्य श्री जी इसके अपवाद रहे। सहज मुस्कान, सरलता, विद्या ददाति विनयम, विनयाद धाति पात्रताम् को उन्होंने अपने जीवन में सार्थक किया।अनेक ग्रंथों की रचना हर विषय पर उनका पूर्णाधिकार जैसी रचनाएं उनके अंतर्मानस में धन्ना सेठ की अकूत सम्पदा की तरह धरोहर के रुप में थी। जीवन के उषाकाल में उगते सूर्य की तरह स्वर्ण आभा लिए अंत तक चमकते रहे। गुरुभक्ति का अनूठा आदर्श अपने मन में लिये आचार्य बनने के बाद भी गुरु के प्रति वही समर्पण भाव जो उन्होंने उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी स्मरणाजंलि सभा में व्यक्त किए। 'गुरु भक्त सहज नहीं, क्या हम गुरु के प्रति श्रद्धावान हैं, क्या हम उनके बारे में जानते हैं? हम तो गुरु समर्पणा के बारे में ऐसे हैं जैसे व्यक्ति समुद्र या तालाब की सतह पर तैर रहे हैं। यदि हम जान जोखिम में ड़ालकर समुद्र के तट पर जाकर उसमें छिपे हीरे-मोती माणक को ला सकते हैं तो मानिये कि हम गुरु के भक्त हैं अन्यथा...

ऐसे परम गुरुभक्त जन-जन की आस्था के केन्द्र, विद्वान, मनीषी, साहित्यिक, ज्ञान, दर्शन के महाज्ञाता आचार्य पू. श्री देवेन्द्र मुन जी अप्रैल 1999 में मुंबई, घाटकोपर में सदा-सदा के लिए विलीन हो गए। उनकी 87वीं जन्म जयंती पर प्रभु जिनेश से प्रार्थना है कि वे जिस स्वरुप में हो सिद्ध, बुद्ध अवस्था का प्राप्त कर मोक्षगामी बने।

✧✧

-: श्री वितरागाय नमः :-

विद्वान्-पण्डितों की आवश्यकता

हमारी संस्था को मुमुक्षु भाई-बहनों, संयमी आत्माओं के अध्यापनार्थ (पढ़ाने हेतु) विद्वान पण्डितों की आवश्यकता है। विद्वान-पण्डितों से अनुरोध है कि वे अपना परिचय-अनुभव विवरण (Bio Data) के साथ शीघ्र भिजवों, ताकि हम साक्षात्कार हेतु आमंत्रित कर सकें।

- **जीवाभिगम-भगवती-पन्नवणा-गम्मा-थोक संग्रह (स्तोक संग्रह) के ज्ञाता अध्यापनाभ्यासी हो।**
- **कर्मग्रन्थ-पंच संग्रह-कम्मपयंडी (कर्म प्रकृति) सहित कर्म सिद्धांत से संबंधित विविध ग्रन्थों के ज्ञाता एवं अध्यापनाभ्यासी हो।**
- **हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत-व्याकरण के ज्ञाता एवं अध्यापनाभ्यासी हो।**
- **आगमों की प्राकृत-संस्कृत प्रधान टीकाओं के ज्ञाता अध्यापनाभ्यासी हो।**
- **प्रमाण नय तत्वा लोकालंकार-तर्क, संग्रह-तर्काभाष-स्याद्वादमन्जरी-षड् दर्शन समुच्चय, प्रमाणमीमांसा, रत्नाकरावतारिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड आदि इत्यादि दार्शनिक ग्रन्थों के ज्ञाता-अध्यापनाभ्यासी हो।**

कृपया आवेदित उपरोक्त विषयों में किसी भी प्रकार की योग्यता रखने वाले विद्वान अपने परिचय पत्र (Bio Data) में सम्पूर्ण विवरण सहित अवश्य आवेदन करें। धन्यवाद्।।

आवेदक

(गजराज जैन)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(कमल कुमार खाबिया)
राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्त क्रान्ति जैन श्रावक संघ, उदयपुर (राजस्थान)
Sh. Kamal Kumar Khabia : A-201, Kalpataru Habitat, Dr. S.S. Rao Road
Parel (East) Mumbai - 400012 (Maharashtra)
Email - k.khabia@gmail.com, Mob. : 09820073533

Adv.

अंधविश्वासों की बेड़ियाँ तोड़ें

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

पिछली सदी के उत्तरार्द्ध से संसार में चहुँ ओर आमूलचूल परिवर्तनों का दौर शुरु हुआ। तगड़ी संचार तकनीक से परिवर्तन की यह गति और तेज हो गई। आज का आदमी हर बात को तर्क की कसौटी पर कसने के उपरांत स्वीकार करना चाहता है। तीर्थंकर महावीर ने कहा- अपनी प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करनी चाहिये:-

-पण्णा समिक्खए धम्मं। आँख मूँद कर लकीर के फकीर बनने से कोई फायदा होने वाला नहीं।

जैन धर्म मूलतः जन-धर्म है; इसलिए, वह सहज ही जीवन-धर्म भी है। किसी अन्धविश्वास को इस धर्म में कभी आश्रय नहीं मिला। जैन जीवन-शैली वैज्ञानिक, आरोग्यप्रदायिनी और कर्तव्यपथ पर अग्रसर करने वाली है। णमोकार महामन्त्र प्रत्येक व्यक्ति के लिए अप्रतिम आदर्श और जीवन्त प्रेरणास्रोत है। भला परमेष्ठी-आराधक किसी रुढ़ि, कुप्रथा या अन्धविश्वास में कैसे जकड़ सकता है? किन्तु कभी-कभी स्थिति इससे भिन्न भी दर्षष्टिगोचर होती है। यह कहते हुए कि नवकार सबसे बड़ा है, सर्वोत्तम है; यह जानते हुए कि:-

'पंच परमेष्ठी को किया गया यह नमस्कार सभी पापों का नाश करने वाला है तथा समस्त मंगलों में सर्वश्रेष्ठ मंगल है'; लोग थोड़े-से दुःख/कष्ट में, बात-बात में यत्र-तत्र भटकते फिरते हैं। इस सम्बन्ध में गाँवों में हालत बदतर है। बीमार हो जाने पर, किसी इच्छा-पूर्ति के लिए या कोई याचना/अरमान लिये लोग देवी-देवरों, जोगियों, भोपों, विभिन्न पीरों व बावजियों के सामने जा-जाकर माथा टेकते नज़र आयेंगे। गले में, भुजा, कलाई या शरीर के किसी अन्य हिस्से पर वैर (धागा), लच्छा या काला डोरा बांधेगे। शरीर पर भभूत (राख) लगाएँगे। जटाएँ बढ़ाएँगे। फिर इन देवी-देवताओं को मानने-पूजने का लम्बा क्रमहीन दौर चल पड़ता है। सुख-दुःख के मौके पर इन्हें धोग देना, धूप-अगरबत्ती, दीप जलाना आदि जारी रहते हैं। बात यहीं समाप्त नहीं होती है। ऐसे देवस्थान, मन्दिर या स्थल, जहाँ निरीह/निर्दोष प्राणियों की क्रूरतापूर्वक बलि/कुर्बानी दी जाती है, यत्र-तत्र कटते-तड़पते पशु-पक्षियों के हृदय-विदारक व खून-हड्डियों के नारकीय दष्श्य दिखाई देते हैं; वहाँ ये शिक्षित, समझदार, अहिंसक, आधुनिक और रुढ़ि-मुक्त कहे जाने वाले लोग परसादी (भोज) आयोजित करते हैं। इन स्थलों के विकास/संवर्द्धन के लिए कुछ शाकाहारी अन्धश्रद्धावश दान-चन्दा भी करते हैं। क्या ऐसा करके ये लोग हिंसा, अन्ध-विश्वास और मिथ्यात्व को बढ़ावा नहीं देते? एक परिचित से मैंने यह सब करने के लिए मना किया तो वह बोला - बलि करने वाले करते हैं, हम तो चूरमा-बाटी बनाते- खाते-खिलाते हैं। इतना सब करने के बावजूद ये भोले विश्वासी इन देवी-देवताओं से भय खाते हैं। *णमो जिणाणं जिय भयाणं* - जिनेश्वर देव को ध्याने वाला भयभीत नहीं हो सकता, वह अभय की साधना करता है।

समय की जरुरत है कि हम गलत परम्पराओं, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों तथा बिना सिर-पैर की बातों को जीवन-व्यवहार में स्थान नहीं दें।

अन्नदान

- **रुचिरा सुराणा जैन**, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, जैन कॉन्फ्रेंस

प्राचीनकाल से दान की भारतीय परम्परा रही है दान चाहे किसी भी प्रकार से किया जाता रहा हो, सभी धर्म सम्प्रदायों ने बड़े विशाल हृदय से इस दान परम्परा को स्वीकार किया है, इस विशाल भारतवर्ष में प्रत्येक जीवन ने अपनी हैसियत के मुताबिक दान किया है, इतिहास में दानवीर कर्ण एवं भामाशाह जैसे अनेक उदाहरण वर्णित हैं।

मानव जीवन में दान देने की अनेक प्रवृत्तियाँ हैं जैसे गोदान, शिक्षादान, अन्नदान एवं आर्थिक दान, जैसी आवश्यकता महसूस की गयी सभी ने अपना अंश अवश्य देकर उन्हें सहयोग प्रदान किया है।

यहाँ पर मैं '**अन्नदान**' का उल्लेख करना चाहूंगी कि बचपन की कुछ स्मृतियाँ मस्तिष्क पटल पर अंकित है। लगभग चालीस वर्ष पूर्व जब इतना विकास नहीं हुआ था, शहर भी छोटे-छोटे होते थे ज्यादातर आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी कस्बों में सेवक (ब्राह्मण) कपड़े का झोला लेकर द्वार-द्वार पर जाते थे तब गृहणी अपने हाथ से अथवा बच्चों के द्वारा एक कटोरी आटा झोले में ड़ाल देती थी समय एवं परिस्थितियाँ बदलने के साथ यह परम्परा या तो समाप्त हो गयी अथवा कम हो गयीइन परिस्थितियों में एक विचार मन में उत्पन्न हुआ कि क्यूँ नहीं हम अपने जैन परिवारों में से इस परम्परा को आरंभ करें। इस व्यवस्था में हम सभी अपनी रसोई में एक स्टील का डिब्बा रखना प्रारंभ करेंगे एवं प्रतिदिन एक कटोरी आटा हम स्वयं अथवा अपने बच्चों के हाथ से उस डिब्बे में ड़ालेंगे एक महीने बाद हम उसे अपने नौकर अथवा ड्राईवर को दान स्वरुप दे देंगे। ब्राह्मण को ढूंढ़ना बड़े शहरों में असंभव सा कार्य है नौकर/ ड्राईवर भी ज़रुरतमंद हैं क्योंकि वो आपके लिए अपनी सेवा दे रहा है।

हम सभी इतने सुविधा सम्पन्न हैं कि महीने में पाँच किलो आटा खरीदकर दे सकते हैं। लेकिन इस प्रयास को आरंभ करने के पीछे मकसद ये है कि हमारी अगली पीढ़ी भी दान की महत्ता को समझें एवं प्रतिदिन कुछ देने की इच्छा मात्र से आपके दिन की शुरुआत होगी वो आपको खुशी प्रदान करेगी।

हमारा आप सभी से आदर विनम्र निवेदन है कि इस छोटे से प्रोजेक्ट से जुड़कर अपना जीवन सुखद एवं इस अन्नदान का संकल्प लेकर उन परिवारों का जीवन सुखद बनाएं, इस प्रयास से हम अनेक परिवारों के चेहरे पर एक मुस्कान ला सकते हैं। सहयोगकर्त्ता सौ. आजादजी मुकेशजी जैन, चंडीगढ़।

✧✧

युवा शक्तिपुंज सम्मेलन इंदौर और युवा सम्मेलन मेरठ की कुछ झलकियाँ

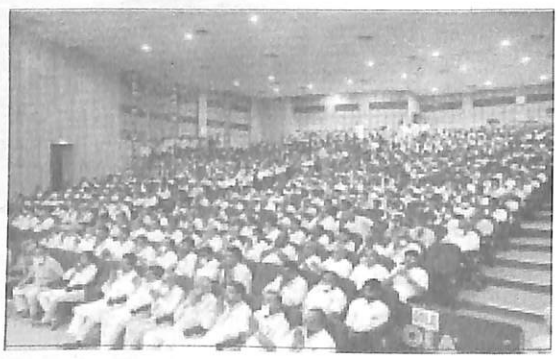

युवा शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

चरित्र ठीक रखा तो दुनिया करेगी नमन ...

तेरह सौ युवाओं को आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी म. सा. ने दिा दिव्य संदेश

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : युवा देश का भविष्य है, युवाओं को अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल करना होगा। चरित्र ठीक रखा तो दुनिया नमन करेगी, चरित्र बिगड़ा तो समझों सब कुछ तहस-नहस हो सकता है।

चरित्र युवाओं की पूंजी है, युवा समाज और देश की पूंजी है, इस पूंजी का सदुपयोग हमें करना हैं, संतों व महावीर की वाणी को आधार माने और युवा सही दिशा में अपने को स्थापित करें, फिर दुनिया में बदलाव अपने आप दिखने लगेगा। यह दिव्य आव्हान किया श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर, मध्य प्रदेश के राजकीय अतिथि दर्जा प्राप्त संत ध्यान गुरु पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. ने।

आचार्यश्री जी दिनांक 24 सितम्बर 2017 को अभय प्रशाल के लाभ मंडपम परिसर में शक्तिपुंज युवा सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय युवा शाखा के इस आयोजन में 14 राज्यों से करीब 1300 युवा एकत्र हुए। आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. ने कहा कि युवा धर्म को आधार बनाए, जरुरतमंदों का मर्म समझे औश्र यह समझें कि मुझे भगवान महावीर का अरिहंत परमात्मा इनकी मदद के लिए भेजा गया है, इस भाव से काम करोगे तो पुण्य कमाओगे, जरुरतमंदों की दुआओं से और आगे बढ़ोगे।

देश के तेरह प्रांत से आए युवाओं को आचार्यश्री सम्राट् पूज्य डॉ. शिवमुनि जी म. सा., युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा., प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाशमुनि जी म. सा. 'निर्भय', मंत्री प्रमुख पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म. सा. आदि ठाणा ने ध्यान की महिमा बताई। युवाओं को बताया कि ध्यान से आप स्वयं को सही ढंग से जान पाओगे, फिर दुनिया में तुम्हें सही गलत का स्पष्ट आभास होने लगेगा। इस अवसर पर मार्गदर्शन, सवाल, जवाब और ध्यान साधना के सत्र के आयोजन भी हुए।

सम्मेलन में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री बालासाहेबजी चोरड़िया जैन, श्री रमेशजी भण्डारी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री विमल जी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, श्री महेन्द्रजी पगारिया जैन, वैय्यावच्च समिति राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिलाल जी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमारजी कर्नावट जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री रविन्द्रजी लोढ़ा जैन, कार्यकारी महामंत्री श्री गणेशजी सांखला जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिरा जी सुराणा जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमलजी तांतेड़ जैन, कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जिनेश्वरजी जैन अलावा देशभर से पधारे जैन कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय अध्यक्ष महोदय, युवा अध्यक्ष महोदय, प्रांतीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण एवं महिला बहनें भारी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों ने अपने उद्बोधन द्वारा युवाओं का मार्गदर्शन किया तथा उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रेरित किया।

प्रेषक : रविन्द्र लोढ़ा जैन

महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

मन्दसौर में महिला अधिवेश का आयोजन

मंदसौर (मध्य प्रदेश) : पुन्ययोग से **'समय के सजग प्रहरी'**, अजात शत्रु संयम सुमेरु उपाध्याय प्रवर पू. श्री मूलचंदजी मा. आदि ठाणा, तपस्वी महासती पू. श्री कंचनकुंवरजी मा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में मंगलमय चातुर्मास चल रहा है तथा विविध कार्यक्रम आयोजित हो रहे है। इसी श्रखला में पू. गुरुदेव श्री मूलचन्दजी म. के 96वें जन्म जयंती के महोत्सव में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस महिला शाखा-मंदसौर के तत्वाधान में एक अधिवेशन का आयोजन **'एक शाम जन्म दाता के नाम'** किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा जैन ने की। मुख्य अतिथि प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमलजी तातेड़ जैन रहे। समारोह में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, मध्य प्रदेश प्रांत से श्री संजयजी नवलखा जैन, सौ. मंजूजी दर्डा जैन, सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, सौ. इंदुजी जैन, सौ. सपनाजी जैन, सौ. एकताजी डागलीया जैन, सौ. मंगलजी धोका जैन, सौ. राजकुमारीजी पामेचा जैन, सौ. सरिताजी जैन आदि उपस्थित थी।

इस अवसरपर मंदसौर जिले से-रतलाम, नीमच, उज्जैन जिले के अलावा मंदसौर की टीम ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुतियाँ दी, जिसमे नाटक, डांस, कव्वाली आदि थे। जज के रुप में सौ. आरतीजी जैन, सौ. अनुरेखाजी जैन ने रतलाम को प्रथम, नीमच को द्वितीय और देवास व उज्जैन को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान दिया। अतिथि को प्रतीक चिन्ह दिए गए और बाहर से पधारने वाली और मंदसौर की प्रस्तुति को अहिंसा सेवा संघ की ओर से पुरस्कार दिए गए। विजेता को प्रांतीय शाखा की और से गिफ्ट दिए गए। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष श्री अशोकजी मारू जैन, महामंत्री श्री रत्नेशजी कुदार जैन, युवाध्यक्ष श्री आशीषजी चोरडिया जैन, महामंत्री श्री अजितजी खटोड़ जैन, श्री पंकजजी मुरड़िया जैन, श्री संजयजी पोरवाल जैन, श्री कपिलजी नाहटा जैन, जिलाध्यक्षा सौ. अनिताजी बाफना जैन, सौ. अलकाजी जैन, सौ. साधनाजी जैन, मंडलाध्यक्षा सौ. राखीजी नाहर, सौ. सरलाजी दुग्गड़, सौ. अनिताजी खटोड़, सौ. जयाजी जैन, सौ. इंदुजी चौधरी, सौ. इंद्राजी रांका उपस्थित थे। नवकार प्रार्थना दीपाजी, अभिलाषाजी, मारूजी जैन, रजनीजी भटेवरा जैन, रीताजी मेहता जैन, स्वागतगीत दीपाजी तलेरा जैन, कल्पनाजी तारापुना जैन के द्वारा किया गया। नवकार डांस बहुमंडल द्वारा हुआ बेटी बचाओ पर सुंदर डांस की प्रस्तुति कोरियोग्राफर प्रीतिजी जैन, अमिताजी मुरडीया जैन, नीताजी जैन, सीमाजी जैन, राखीजी नाहर जैन द्वारा की गई। स्वागत भाषण शशिमारू सारथी द्वारा स्वागत मनीषाजी मेहता जैन द्वारा और आभार आशाजी साम्भर जैन द्वारा प्रकट किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन दिव्या जी कांकरिया जैन व आयुषीजी तारापुना ने संयुक्त रूप से किया।

उज्जैन जिले की ओर से पुष्पलता जी कटारिया जैन ने शशिमारू को 'नारीशक्ति की सजग प्रहरी' सम्मान से सम्मानित किया। देवास जिले की ओर से शशिमारू को 'नारी गौरव' सम्मान से सम्मानित किया रतलाम ग्रुप ने शाल श्रीफल से सम्मान किया। चन्दन बाल महिला मंडल ने भी साड़ी से और मनीषा मेहता जैन ने चूंदड़ से सम्मान किया। शशिमारू ओर टीम के द्वारा बेस्ट जिला का सम्मान उज्जैन ओर देवास सक्रिय जिले में नीमच ओर रतलाम को सम्मानित किया उत्कृष्ट कार्य के लिए आशा साम्भर ओर उत्कृष्ट योगदान के लिए मनीषा मेहता जैन को ओर बेस्ट कोषाध्यक्ष पद के लिए मनीषा मेहता जैनको सम्मानित किया। अन्य पदाधिकारी और मेम्बर का भी कार्य के प्रति समर्पित सम्मानं किया। इस अवसर पर जैन दिवाकर युवामंच के अध्यक्ष सर्वश्री कपिल नाहटा, पंकज मुरडिया उपस्थित थे। अजितजी नाहर जैन, राजूजी संचेती जैन, वीरेंद्र मारू जैन, तेजमल गांधी जैन, मनिलालजी पामेचा जैन, यशपाल बाफना जैन, नरेंद्र मारू जैन, राजीव मेहता जैन, विजय खटोड़ जैन, नवरत्न महिला मंडल, राजेन्द्र परिषद मंडल, श्रेयांस मंडल, खतरगंज मंडल, वर्द्धमान महिला और चन्दन बाला, मंडल मरुदेवी मंडल, दिवाकर विचार मंच मंडल, दिगम्बर मंडल के साथ ओर भी मंडल की

महिला ने उपस्थिति दी। बालिका मंडल ने सभी का कुमकुम से स्वागत किया। संचालन प्रवक्ता दिव्या कांकरिया और आयुषि तारापुना ने किया। सभी महिला को जो सम्मान दिया उसके प्रायोजक अशोक मारु रत्नेश कुदार थे। बहु मंडल के डांस को पुष्पा चेलावत की ओर से भी गिफ्ट प्रदान की।

भव्य महिला अधिवेशनः- श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस प्रांतीय महिला शाखा गुजरात और श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ शांति भवन सूरत द्वारा आयोजित महिला अधिवेशन परम पूजनीय मधुर गायिका पू. श्री राजीमतीजी मा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सौ. सज्जन देवी जैन कन्हैया लाल जी सुराना जैन उनके सुपुत्र श्री हिम्मतजी सुराणा जैन और उनके परिवार ने की। स्वागता अध्यक्ष सौ. पुष्पा देवी जैन और उनके सुपुत्र श्री टिन्कुजी बोल्या जैन और उनकी धर्मपत्नी सौ. किरणजी बोल्या ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रुचिरा जी सुराणा, जीव दया योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश जी सिंघवी जैन, महामंत्री श्री छीतरमलजी रांका जैन, मानव सेवा योजना की राष्ट्रीय अध्यक्षा सौ. इन्दुजी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री सौ. विनीताजी ओरड़िया, राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्षा सौ. मंजू जी दर्ड़ा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सौ. दिलखुशजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री सौ. एकताजी डागलिया जैन, सौ. ललिताजी आँचलिया जैन, सौ. संगीताजी बाफना जैन, सौ.साधना जी खटवड जैन, सौ.कैलाशजी संचेती जैन, सौ.कंचनजी मादरेचा जैन, महाराष्ट्र पंचम जोन अध्यक्षा सौ.सुरेखाजी कटारिया जैन और उनकी कार्यकारिणी राजस्थान प्रांतीय अध्यक्षा सौ. लाडजी मेहता, गुजरात शाखा की निवर्तमान अध्यक्षा सौ.मीनाजी रांका आदि अतिथिगण मौजूद थे। इसके साथ ही गुजरात शाखा के पदाधिकारी सौ.भगवतीजी परमार, श्री गौतमजी बाफना, श्री दिनेशजी संचेती आदि व युवाध्यक्ष श्री ललितजी विसलोत अपनी कार्यकारिणी के साथ उपस्थित थे। श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघशांति भवन के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

समारोह के विषयः- महिला सशक्तिकरण- हर कदम हमारा सफलता की और पर मुख्य वक्ता सौ. श्वेताजी जैन मर्चेंट ने अपने बहुत ही सुंदर भाव व्यक्त किए, महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा जैन ने विषय पर बोलते हुए सभी को भाव विभोर कर दिया। सभी वक्ताओं ने अपने विचार अपने अनुभव व्यक्त किए। जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा के सदस्यों द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के तहत रेलवे स्टेशन पर कचरा पात्र रखने के कार्यक्रम का अनावरण श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन और श्री रुचिराजी सुराणा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्षा स्नेहलता (स्वीटी) जी चंडालिया ने सभी का आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री अनिताजी कोठारी जैन ने किया ओर कोषाध्यक्षा मीनाजी बोकड़िया जैन ने कार्यक्रम में सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में लकी ड्रॉ में चाँदी के सिक्के वितरित किये गए। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में महिलाओं की उपस्थिति रही।

प्रेषक : रुचिरा सुराणा जैन

आचार्यश्री जी के हीरक जन्मोत्सव पर सौ. रीचाजी जैन के 75 ध्यान साधना शिविरों का संकल्प संपूर्ण हुआ।

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी जी की अनंत कृपा एवं आत्मज्ञान योगी आतम अनुशास्ता चतुर्थ पट्टधर पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. की हीरक जन्म जयंती के उपलक्ष में श्रीमती रीचाजी संदीपजी जैन, लुधियाना (राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा) ने 75 आत्म-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन 18 सितम्बर 2016 में पूरे वर्ष भर में करवाने का संकल्प लिया था, जिसे 14 सितम्बर 2017 तक यह संकल्प 76 शिविर बहुत ही अच्छे ढंग से संपूर्ण किए गए। यह ध्यान-साधना शिविर ध्यान साधिका सौ. रेनूजी जैन के द्वारा आचार्य भगवन की आज्ञा से करवाया गया। सभी संस्थाओं, महिला मंडल और भी जिस-जिस व्यक्ति ने इसमें अपना सहयोग दिया है उन सभी का हृदय की अनंत गहराईयों से बहुत-बहुत धन्यवाद प्रेषित किया गया।

प्रेषक : ललिता बंब जैन

समाचार - प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा तथा राष्ट्रीय वार्षिक साधारण सभा का इन्दौर में खुशनुमा माहौल में आयोजन

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा तथा राष्ट्रीय वार्षिक साधारण सभा का आयोजन दिनांक 17 सितम्बर 2017 को अहिल्या नगरी इन्दौर में शिवाचार्य समवषरण, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अभय प्रसाल, रेस कोर्स रोड़, इन्दौर (मध्य प्रदेश) में सदन सदस्यों की भारी संख्या की उपस्थिति के साथ खुशनुमा माहौल में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

तीनों ही सभाओं का सुंदर संचालन राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया, जिसमें राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा की शुरुआत राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन की अध्यक्षता में प्रातः 11:30 बजे से हुई। एजेण्डे के प्रत्येक विषय पर उपस्थित सदन सदस्यों ने बहुत ही सुन्दर चर्चा, विचार-विमर्ष कर अपने-अपने सुझाव दिए, जिन पर बहुत ही गहनता से लिया निर्णय लिए गए। जैन कॉन्फ्रेंस की भाविष्यिक गतिविधियों एवं रचनात्मक कार्यक्रमों पर सुन्दर-सुन्दर योजनाएं सदन सदस्यों ने रखी, जिनमें जैन कॉन्फ्रेंस के लिए, समाज के लिए तथा साधु-साध्वीवृंद के लिए नई-नई योजनाओं पर विचार-विमर्श कर प्रारंभिक रूप प्रदान किया गया। वर्ष 2016-17 के ऑडिटिड आकाउंट्स को सदन के सम्मुख रखा गया। चर्चा के बाद सभा ने ऑडिटिड अकाउंट्स को सर्वसम्मति से अपनी सहमति प्रदान की।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की शुरुआत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन की अध्यक्षता में दोपहरः 12:15 बजे से हुई। कार्यकारिणी समिति सभा में प्रथम बार इतनी बड़ी उपस्थिति देखने को मिली। शांत एवं सुन्दर माहौल के बीच एजेण्डे पर चर्चाएं हुई। जिसमें जैन कॉन्फ्रेंस की भाविष्यिक गतिविधियों के लिए सदन सदस्यों ने सुन्दर-सुन्दर विचार रखें। जिनको सुनकर अमल में लाने का आश्वासन राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय जी ने दिया। वर्ष 2016-17 के ऑडिटिड आकाउंट्स को सदन के सम्मुख रखा गया। चर्चा के बाद सभा ने ऑडिटिड़ अकाउंट्स को सर्वसम्मति से अपनी सहमति प्रदान की।

वार्षिक साधारण सभा का आयोजन दोपहर 2:00 बजे से राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन की अध्यक्षता में किया गया। साधारण सभा में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी बोकरिया जैन ने वर्ष 2016-17 के ऑडिटिड आकाउंट को सदन के सम्मुख रखा। चर्चा के बाद सभा ने ऑडिटिड़ अकाउंट्स को सर्वसम्मति से अपनी सहमति प्रदान की। राष्ट्रीय साधारण सभा में युग प्रधान, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. ने स्वयं पधारकर सभी सदन सदस्यों को आर्शीवचन एवं मांगलिक प्रदान की।

सभा में राश्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्रीमान् मोहनलालजी चोपड़ा जैन, विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री जे. डी. जैन जी, प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया

जैन, श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन, वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विलास जी लोढ़ा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री भंवरलालजी डी. बोहरा जैन, श्री औंकारसिंहजी सिरोया जैन, श्री बालासाहेबजी चोरड़िया जैन, श्री तनसुखजी झामड़ जैन, श्री रमेशजी भण्डारी जैन, श्री बी. शांतिलालजी पोखरना जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री जयकुमारजी जैन, श्री विजय जी डागा जैन, श्री सागरजी सांखला जैन, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री श्री दिनेशजी सुराणा जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमारजी कर्नावट जैन, जीवन प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजयजी बोथरा जैन, मानव सेवा योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री महेशजी डाकोलिया जैन, श्री मंत्री श्री लादुलालजी बाफना जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमलजी तांतेड़ जैन, अलावा प्रांतों से प्रांतीय अध्यक्षगण, राश्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण तथा साधारण सभा के सदस्यगण उपस्थित थे। सभा समाप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन ने सभा में उपस्थित महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद शाब्दिक रूप से किया।

प्रेषक : महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12 शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली–110001

दूरभाष : 91–011–23363729, 23365420

आज दिनांक 17 सितम्बर 2017 रविवार को शिवाचार्य समवसरण, अभय प्रशाल, रेसकोर्स रोड, इन्दौर पर आयोजित श्री ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन, कान्फ्रेंस, नई दिल्ली की प्रबंध समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं वार्षिक साधारण सभा में प्रस्ताव पारित किया है–

1. श्रमण संघ समाचारी के अनुसार कोई भी सन्त सती पूरे भारत वर्ष में समाचारी की पालना नहीं करते है तो उस बारे में किसी भी तरह की कार्यवाही करने का सम्पूर्ण अधिकार आचार्य सम्राट परम पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म. सा. को है। इस संदर्भ में अपने अधिकार का उपयोग करते हुए आचार्य भगवन किसी भी संत संती के विषय में कोई कार्यवाही करते है तो उस निर्णय का श्री ऑल इण्डिया श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेंस, नई दिल्ली पूर्णतया समर्थन करेगी। इस संदर्भ में आचार्य श्री जी जैन कान्फ्रेंस को कोई भी लिखित आदेश करते है तो जैन कॉन्फ्रेंस उसकी पालना करने हेतु कटिबद्ध है।

मोहनलाल चोपड़ा जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री केशरीमल बुरड़ जैन
विश्रयस्त मंडल चेयरमेन

चंदनमल चोरड़िया जैन
प्रमुख मार्गदर्शक

अविनाश चोरड़िया जैन
प्रमुख मार्गदर्शक

जे. डी. जैन
पूर्व अध्यक्ष

नेमनाथ जैन
निवृतमान अध्यक्ष

विलास लोढा जैन
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

अशोक पगारिया जैन
महामंत्री

महेश बोकरिया
कोषाध्यक्ष

शशि कर्नावट
युवा अध्यक्ष

श्री उत्तराध्यनसूत्र वांचना

इंदौर (मध्य प्रदेश) : 21 दिवसीय अनुष्ठान मूल, अर्थ एवं विवेचन विधि सहित दिनांक 30 सितंबर से 20 अक्टूबर, 2017 श्री उत्तराध्ययन वांचना समयः- प्रातः 8.30 से 9.30 बजे तक युवाचार्य श्री जी का प्रवचन प्रातः 9.30 से 9.50 बजे तक आचार्य श्री जी का प्रवचन 9.50 से 10.15 बजे तक स्थानः- शिवाचार्य समवसरण, अभय प्रशाल, रेस कोर्स रोड़, इंदौर, (मध्य प्रदेश)। आप सभी कार्यक्रम में सहभागी होकर शास्त्र श्रवण कर वीतराग वाणी का लाभ लें। अनुष्ठान का आकर्षण-प्रभु महावीर के समवसरण की भाव यात्रा एवं 21 दिनों में सम्पूर्ण श्री उत्तराध्यन सूत्र की विधि सहित वांचना अनुष्ठान के नियम - सादगी के साथ सामायिक के वस्त्र मुखवस्त्रिका आसन आदि या हलके रंग के सादे वस्त्रों में पधारें। नियत समय पर शास्त्र स्वाध्याय में सहभागी बनें। प्रतिदिन श्रद्धा के साथ शास्त्र स्वाध्याय करें। तप के रुप में भोजन में एक वस्तु का सामूहिक त्याग। जप के रुप में प्रतिदिन प्रातः 27 लोगस्स का जाप एवं रात्रि में 5 नमोत्थुणं का पाठ। अगर हो सके तो दिन भर में 1 घंटे का मौन का पालन। अत्यधिक फल पाने के लिए अगर हो सके तो ब्रह्मचर्य का पालन। अनुष्ठान में भाग लेने वाले जो व्यक्ति 21 दिन में से 17 दिन या उससे अधिक अपनी उपस्थिति दर्ज करायेंगे उन्हें विशेष पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। अनुष्ठान के पूर्व शिवाचार्य समवसरण के बाहर अपनी हाजिरी (Attendence) लगावाकर अन्दर प्रवेश करें। आप सभी अधिक से अधिक नाम लिखाये। संपर्क सूत्रः- श्री रमेशजी भण्डारी जैन, 09302103817, श्री जिनेश्वरजी जैन, 09981850900, श्री प्रकाशजी भटेवरा जैन, 09827031032, श्री सन्तोषजी जैन मामा, 09806044110, श्रीमती रेणु डीपीनजी जैन, 07869999251 श्रीमती अनीताजी भटेवरा जैन, 09425960407, श्रीमती सुनीताजी छजलानी जैन, 09302522846, श्रीमती सुशीलाजी पोरवाल जैन, 07987335020, श्रीमान रितेशजी कटकानी जैन, 09425081652, श्रीमती सुविधिजी जवेरी, 09826217100

प्रेषक : कपिल जैन

यतियों के आतंक को किया समाप्त

जयपुर (राजस्थान) : श्रमण संघीय उपप्रवर्तक पू. श्री विनयमुनि जी म. 'भीम' ने आज जयपुर में आचार्य सम्राट, चारित्र चूड़ामणि, एकाभावतारी श्री जयमल जी म. को उनकी 312वीं जयन्ती पर गुण स्मरण करते हुए कहा कि वे सागर के समान गहरे, सूर्य समान तेज और चन्द्रमा के समान शीतल थे। उन्होंने यतियों के आतंक को समाप्त कर किया था। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर, जयपुर के तत्वावधान में आयोजित गुणानुवाद सभा को चतुर्विध संघ का सान्निध्य प्राप्त हुआ। संघमंत्री श्री उज्जवल कुमार धूपिया ने कहा कि अहिंसा का पुजारी मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। इस अवसर पर महिला व बालिका मंडलों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किये। समारोह में स्थानीय लोगों के अलावा पोरवाल समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री छगनलाल जैन इंदौर, मेघराज जैन अध्यक्ष पोरवाल समाज जयपुर, लड्डू लाल जैन बराना, रामप्रसाद जैन रेंजर, आनंदमल छल्लाणी जैन चेन्नई, प्रांतीय अध्यक्ष अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस तमिलनाडु, पूर्व अध्यक्ष अविनाश चोरडिया, दानवीर सेठ लक्ष्मीचंद तालेड़ा, दिवाकर श्रीसंघ प्रमुख, रत्नेश पोखराणा, लालकोठी श्री संघ अध्यक्ष श्री पी.सी. गांधी, भास्कर भाई, श्याम नगर श्रीसंघ अध्यक्ष, विजय चोरडिया प्रमुख श्रावक, श्याम नगर श्री संघ उत्तम चंद डागा पूर्व मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस और श्री गिरीश जैन

जामनगर आदि। समारोह के दौरान विदुषी महासती श्री सुयशा जी के सांसारिक पिता कमलेश जैन औश्र माता श्रीमती बबली जैन रोशनपुरा का अभिनंदन किया गया। मंच संचालन पू. श्री सन्मति मुनि जी म. 'साहिल' ने किया सहयोग वीर पिता कमलेश जैन ने किया। सभी कार्यक्रमों की व्यवस्थाओं को सुचारु बनाये रखने में सौहार्द संस्था और श्रीरत्न युवक परिषद का सहयोग प्रशंसनीय रहा। अंत में श्रीसंघ अध्यक्ष श्री रुपचन्द जैन मोदी बरवाड़ा ने आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित कर गौतम प्रसादी के लिए सभी श्रावक श्राविकाओं को सादर आमंत्रित किया।

प्रेषक : विजय संचेती

भारतीय डाक विभाग द्वारा आचार्यश्री जी के जन्मोत्सव पर विशेष कवर जारी

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : दिनांक 18 सितम्बर 2017 को शिवाचार्य समवशरण, इन्दौर में आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म. सा. के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर भारतीय डाक की ओर से विशेष कवर जारी कर उसी दिन आचार्यश्री जी के कर-कमलों द्वारा ही लोकार्पण किया गया। यह विशेष कवर बैंगलोर निवासी श्री सुनीलजी सांखला जैन द्वारा प्रायोजित एवं शिवाचार्य भगवन के जन्मोत्सव पर श्रद्धा की भेंट है। लोकार्पण जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री सुनील जी सांखला जैन-बैंगलोर, भामाशाह श्री आनंदप्रकाशजी जैन-दिल्ली, श्रावक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमतिलालजी कर्नावट जैन, श्री सुभाषजी ओसवाल जैन-दिल्ली, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी भंडारी जैन-इंदौर, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जिनेश्वरजी जैन-इन्दौर, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन-सूरत द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूरे भारतवर्ष से बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

प्रेषक : सुनील सांखला जैन

रक्त दान शिविर सम्पन्न

रतलाम (मध्य प्रदेश) : संघ अध्यक्ष ललित पटवा एवं नवयुवक मण्डल विनोद कटारिया ने बताया कि दिनांक 17, रविवार, 2017 को युवा दिवस पर एवं मालव रत्न उपाध्याय पू. श्री कस्तुरचंदजी म.सा. की पावन स्मृति में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन नीम चौक स्थानक पर पूज्य महासती पू. श्री शशिप्रभाजी म.सा., पू. श्री इन्दुप्रभाजी म.सा., पू. श्री निपुणप्रभाजी म.सा., पू. श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा., पू. श्री रिद्धीप्रभाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में जैन दिवाकर संगठन समिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष इन्दरमल जैन, महामंत्री महेन्द्र बोथरा, श्रीसंघ के पूर्व अध्यक्ष सुरेश कटारिया, मणीलाल कटारिया, शांतिलाल कटारिया के मुख्य आतिथ्य में संघ अध्यक्ष ललित पटवा की अध्यक्षता में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन महासती श्री षषिप्रभाजी म.सा. ने मंगलाचरण से रक्तदान शिविर प्रारंभ हुआ। उक्त शिविर में 15 महिलाओं सहित 108 व्यक्तियों द्वारा रक्तदान किया गया। संघ के महामंत्री विनोद बाफना ने बताया कि नीमचौक स्थानक पर लगातार 11 वें वर्ष रक्तदान शिविर का आयोजन मानव सेवा समिति के सहयोग से सम्पन्न हुआ जिसमें पहली बार इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर नवयुवक मण्डल विनोद कटारिया, महामंत्री अजय खिमेसरा, कोशाध यक्ष रितेश मुणत, संजय मेहता, नवीन गांधी, पियुष श्रीमाल, सुनील पटवा, सौरभ बोथरा, दीपक कटारिया, विपीन श्रीमाल, धर्मेन्द्र पितलीया, अषोक ललवानी, विक्रम पितलीया, जितेन्द्र पटवा, सोभाग्य नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष निलेश मेहता, रखब चत्तर, राजेश बोरदिया, संदीप चौरड़िया, अश्विन गंग, बहुमण्डल अध्यक्ष सोनू बाफना, महामंत्री प्रीति बोथरा सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। मानव सेवा समिति के सभी सदस्यों को भी विशेष सहयोग रहा। नवयुवक मण्डल द्वारा इनका आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री विनोद बाफना ने किया।

प्रेषक : विनोद बाफना

मूक प्राणियों के प्रति संवेदना स्वरूप नवकार महामंत्र के सामूहिक जाप

बखतगढ़ (मध्य प्रदेश) : जैन समाज ने ईद के दिन मूक प्राणियों के प्रति संवेदना एवं प्रत्येक जीव को शांति मिले इसी के स्वरूप श्री वर्धमान स्थानक भवन बखतगढ़ में नवकार महामंत्र के जाप का आयोजन किया गया। इसमें जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं व बच्चों ने जीव मात्र को शांति प्रदान करने वाले महामंत्र के एक स्वर में सामूहिक जाप किए। इसके पश्चात् महामंत्र प्रार्थना, गुरु उमेश चालीसा एवं गुरु गुणगान स्तुति भी की गई। जाप की प्रभावना वितरण का लाभ सर्वश्री शांतिलालजी ओरा, माणकलालजी पटवा एवं चन्द्रप्रकाशजी व्होरा परिवार पृथक-पृथक लिया। इस दिन समाज में उपवाय, आयंबिल, एकासन आदि आराधाना की गई।

प्रेषक : दिलीप दरड़ा जैन

गोरखपुर में जिनवाणी की अविरल गंगा प्रवाहमान

जबलपुर (मध्य प्रदेश) : पूज्य महासती इन्दूबाला जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में गोरखपुर में जिनवाणी की गंगा के मध्य से पूज्य महासती जी ने फराया कि 'गौतम से प्रभु कहते है नहीं पीछे हटना हैं, जन्म-जन्म के मरण को अब दूर करना है, अरिहंत बनना है मुझे सिद्ध बनना है। आज मिली हैं मनुष्य जीवन में जिनवाणी आराधक बनना है। उन्होंने कहा कि आमतौर पर कुण्डली में शनि, दिमाग में मनी, जीवन में दुश्मनी ये सभी अच्छे नहीं लगते हैं। बहुत रुपया, बहु रूपीया बना देते है। कम्प्यूटर में 'कन्ट्रौल, डिलीट, लुक फॉर अलटरनेटिव सोल्यूशन' ये तीनों चीजें जीवन को खुशहाल बना देती हैं। अपने शब्दों पर कन्ट्रौल रखे।। देश की शोभा गद्दारों से नहीं बहादुरों से होती है। तपों में श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य का पालन करना होता हैं। मनुष्य की आदत हैं गुस्सा करना, इधर-उधर की बातें करना। इन आदतों को हमें सुधारने का संदेश महासती जी ने दिया है। पूज्य व्याख्यानी महासती इन्दूबाला जी म. के स्वास्थ्य में गुरु कृपा, आचार्य कृपा, उपाध्याय कृपा से स्वास्थ्य में समाधि एवं निर्मलता है। प्रवचना में मांगलिक फरमाते है, दिन में धर्म चर्चा में रत्त रहते हैं।

प्रेषक : मदनलाल जैन

श्री भूपेन्द्रकुमारजी दक जैन (IPS) राष्ट्रपति पदक से सम्मानित

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) : भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री भूपेन्द्रकुमारजी दक जैन को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धराराजे जी सिंधिया ने राष्ट्रपति पदक प्रदान कर सम्मानित किया। गौरतलब है कि उदयपुर जिले के कानोड़ कस्बे में एक मध्यमवर्गीय ओसवाल परिवार में श्री भूपेन्द्रकुमारजी का जन्म हुआ था। कुछ समय तक भारतीय रेल सेवा में अपनी सेवाएं देने के बाद 1989 में आपका चयन भारतीय पुलिस सेवा में हो गया। श्री भूपेन्द्र कुमारजी दक जैन श्रेष्ठ ख्याति प्राप्त सफल अधिकारी की समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण है। ऐसे होनहार प्रतिभावान पर समाज को गर्व है।

प्रेषक : रघुवीर जैन

आचार्यश्री जी के जन्मोत्सव पर आश्रितों को खाद्य सामग्री का वितरण

कोयंबतूर (तमिलनाडु) : संघ कोयंबतूर के तत्वावधान में स्थानीय सद्गुरु सेवाश्रम में श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् परम पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म. सा. के हीरक जन्मोत्सव के अवसर पर आश्रितों के बीच उपयोगी वस्तु व खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। युवक संघ के अध्यक्ष श्री बबलूजी ललवाणी जैन की अगुवाई

में प्राप्त आश्रम पहुंचे सदस्यों ने स्कूल उपयोगी वस्तु व अन्नदान भी किया। इस अवसर पर युवक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेश कुमार जी मुणोत ने कहा कि महापुरुषों की जन्म जयंतियाँ सभी के लिए खुशी की खबर के साथ ही सामाजिक कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर भी देती है। कार्यकर्ता आश्रितों से रूबरू मिलते है तो उन्हें उनसे प्रेरणा मिलती है कि दुनिया में कोई भी निराश्रित नहीं है। परोपकार ही जीवन का मंत्र है, जिससे दूसरों को प्रेरणा मिलती है। जैसे आचार्य भगवन् का जन्म दिवस इस वर्ष कई परोपकारी कार्यों से मनाया जा रहा है। युवक संघ के संयोजक श्री राजेश कुमार गादिया जी ने सेवा कार्य के लाभार्थी परिवार मांगीलाल नरेशकुमार जी मुणोत परिवार का अभिनंदन किया। उपाध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी खारीवाल जैन ने वितरण कार्य का शुभारंभ किया। श्री हेमंतजी भंसाली जैन ने व्यवस्था में सहयोग किया। आश्रम के प्रबंधक पोन्नुस्वामी जी ने युवक संघ के सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया व संघ द्वारा निरंतर आश्रम को सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया।

प्रेषक : राजेश गादिया जैन

जिनशासन का भाग्य है कि इतने तपस्वी संत हमें मिलें है : कमलमुनिजी म. 'कमलेश'

कानपुर (उत्तर प्रदेश) : आचार्य सम्राट् ध्यान योगी पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. के जन्मोत्सव के अवसर पर कानपुर आनंदपुरी जैन स्थानक में राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि जी म. सा. 'कमलेश' ने कहा कि जिनशासन का भाग्य है कि इतने महान त्यागी, तपस्वी, सरल रिजु, सर्वगुण संपन्न आचार्य भगवन का सान्निध्य हम सबको मिला है। उनके निर्देश आज्ञा का पालन समर्पण श्रद्धा और निष्ठा के साथ करने का संकल्प हम सबको आज के दिन लेना है, यही सबसे बड़ी प्रभु के चरणों में भेंट होगी। प्रत्येक संत-सती और श्रावक-श्राविका संगठन को मजबूत करने के लिए आगे आए। मेवाड़ के पावन धरा उदयपुर के अंदर आगामी चातुर्मास का हार्दिक अभिनंदन मेवाड़ के माटी का होने व संघ के मंत्री होने के नाते आचार्य भगवन का भावभीना आत्मीय पलके बिछा के स्वागत जयंती के प्रसं गपर जैन दिवाकर कमल तीर्थ गौशला डूंगला में चित्तौड़ की जैन दिवाकर महिला परिषद ने गायों को गुड़ खिलाया। कानपुर में भी गौशाला में अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंत्र ने गौशाला में सेवा दी। पू. श्री कौशलमुनि जी म. सा. ने मंगलाचरण किया। पू. श्री घनश्याम मुनि जी म. ने विचार व्यक्त किए।

प्रेषक : अशोककुमार पगारिया जैन

पेरम्बूर क्षेत्र में त्याग-तपस्याओं की झड़ी

पेरम्बूर, चेन्नई (तमिलनाडु) : श्रमण संघीय सलाहकार, भीष्मपितामह, राजर्षि पू. श्री सुमतिप्रकाा जी म. एवं उपाध्याय प्रवर, वाचनाचार्य पू. डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. के सुशिष्य आगमज्ञात प्रवचन कुशल पू. डॉ. श्री समकित मुनि जी म. आदि ठाणा, चेन्नई की धर्मनगरी पेरम्बूर में सुखसाता पूर्वक विराजमान है। पूज्य गुरु भगवंातें के प्रवचन बड़े ही रोचक व आत्मोद्धारक हैं। चातुर्मास के प्रारंभ से ही धर्माराधना का ठाठ लगा हुआ है। पूजयश्री जी की प्रेरणा से चातुर्मास के प्रारंभ से पेरम्बूर क्षेत्र में त्याग-तपस्याओं की झड़ी लगी हुई है। 125 अठाई एवं अठाई उपरांत तपस्या संपूर्ण है, जिमें 7 अर्द्ध मासखमण, 18 तपस्वियों ने 11 उपवास और अन्य ने 8, 9 की तपस्यायें पूर्ण की है। चार सौ से अधिक तेले की तपस्या संपन्न हुई है। अभी बहुत से तपस्वी तपस्या के महामार्ग पर अग्रसर हैं। चातुर्मास में 95 प्रतिशत तपस्याएं युवाओं द्वारा पूर्ण की गई हैं।

प्रेषक : चेतना पटवा जैन

'ऋषि सम्प्रदाय का इतिहास' पुस्तक का भव्य विमोचन

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. द्वारा संशोधित एवं परिवर्द्धित **'ऋषि सम्प्रदाय का इतिहास पुस्तक'** का विमोचन सोमवार 18 सितम्बर 2017 को शिवाचार्य समवशरण, इन्दौर में आचार्य सम्राट् ध्यान योगी परम पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म. सा., युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा., प्रवर्तक पू. श्री प्रकाशमुनि जी म. सा. 'निर्भय' आदि संत-सतियों के पावन सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों के कर-कमलों द्वारा विमोचन किया गया। पुस्तक के संबंध में संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार से है : - **पुस्तक का नाम : ऋषि सम्प्रदाय का इतिहास, आशीर्वाददाता : आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म. सा., प्रवर्तक पूज्य श्री कुंनदनऋषि जी म. सा., मूल लेखक : श्रद्धेय पू. श्री मोतीऋषि जी म. सा., संयोजक युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा., सह-संयोजक : हितमितभाषी पूज्य श्री हितेन्द्रऋषि जी म. सा., अवतरण : 20 जुलाई 2017, आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. सा., 117वीं जन्म जयंती, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान : श्री तिलोकरत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, आनंदधाम, अहमदनगर (महाराष्ट्र), अक्षर संयोजन : फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर्स, उज्जैन (मध्य प्रदेश), मुद्रक : रॉयल ऑफसेट, कलालसेरी, उज्जैन।** **प्रेषक : पारस मोदी जैन**

करेड़ा में छाई तप की बहार

करेड़ा (राजस्थान) : श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ राजाजी का करेड़ा में विराजमान युवाचार्य पू. श्री मधुकर मुनि जी म. की सुशिष्या मधुर प्रवक्ता पू. साध्वी श्री कमलप्रभा जी म. का भव्यातिभव्य चातुर्मास धर्म-ध्यान के ठाट से चल रहा है। चातुर्मास के मंगलमय प्रवेश के साथ प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण, १२ घंटे नवकार मंत्र जाप निरंतर जारी है। गुरुणी मैया की अमृतमय वाणी बरस रही है। तेले की कड़ी, उपवास, आयंबिल, एकासना का त्रिवेणी तप भी चल रहा है। आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म., श्रमणसूर्य मरुधर केसरी जी म., गुरु रूप-रजत आदि महापुरुषों की जन्म जयंतियाँ आयंबिल, एकासना, सामायिक, तेला दिवस के रूप में मनाई गई। श्रावक भादवा की बरसती रिमझिम फुहार में तपस्या की बहार आ गई। निक्की गोखरु, चंदा चोरड़िया, उदयलाल रांका, संदीप मेहता, टीना चोरड़िया, पीयूष संचेती, प्रेमबाई गोखरु, गीतासेन, कविता गांधी, शिल्पा गांधी, निलेश मांडोत आदि ने कई तपस्याएं की। **प्रेषक : अमरसिंह कोठारी जैन**

राष्ट्रीय मंत्री श्री पारसजी दुग्गड़ जैन एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री दिलीपजी टाटिया जैन भारत ज्योति अवार्ड से सम्मानित

धुलिया (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री, महावीर सोशल ग्रुप के अध्यक्ष तथा श्रावक संघ के कर्मठ कार्यकर्ता श्री पारसजी दुग्गड़ जैन व सटाणा निवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री दिलीपजी टाटिया जैन को हाल ही में इंडियन इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी, दिल्ली द्वारा दिया जाने वाला महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा वाला भारत ज्योति अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। उपरोक्त संस्था द्वारा पूरे देशभर के सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक क्षेत्र में अच्छे कार्य करने वाले मान्यवरों को हर वर्ग में सम्मानित किया जाता है। भारत ज्योति अवार्ड इस वर्ष श्री पाररसजी दुग्गड़ जैन को छत्तीसगढ के भूतपूर्व राज्यपाल डॉ. के. एम. सेठ जी, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री राजेश जी टंडन, मेजर श्री वेदप्रकाश जी, जनरल सैक्रेट्री, श्री गुरुप्रितसिंह जी, श्री एस. एन. बयाना जी, श्री भुवनेश्वर कालीना जी, भारत सरकार के माजी मंत्री श्री भीष्म

नारायणसिंह की प्रमुख उपस्थिति में यह अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। अवार्ड मिलने के बाद धुलिया श्रीसंघ द्वारा पर्युषण पर्वकाल में भरी सभा में अवार्ड संघपति तथा पदाधिकारियों के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया। अवार्ड द्वारा सम्मानित होने से जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, श्री संघ के प्रमुख श्री कांतिलाल जी चोरड़िया जैन, महासंघ के श्री के.के. ताथेड़ जी, श्री हरीष जी चोरड़िया जैन, श्री नंदलालजी रूणवाल जैन, डॉ. हेमंतजी पारख जैन, श्री किशोरजी मुणोत जैन, श्री विजयजी दुग्गड़ जैन, श्री रमेशजी बोथरा जैन, श्री उज्जवलजी दुग्गड़ जैन, श्री सुरेशजी चोरड़िया जैन, श्री तुषारजी बाफना जैन, श्री चन्द्रकांतजी रूणवाल जैन, श्री दीलीपजी टाटिया जैन, श्री सुनीलजी टाटिया जैन, श्री चन्द्रकांत जी चोरड़िया जैन आदि पदाधिकारियों द्वारा अभिनंदन किया गया।

प्रेषक : विजय दुग्गड़ जैन

श्री एस. एस. जैन सभा गांधी मण्डी पानीपत की नई कार्यकारिणी का गठन

पानीपत (हरियाणा) : श्री एस. एस. जैन सभा, गांधी मण्डी, पानीपत के नव-निर्वाचित प्रधान श्री जगदीश चन्द्र जी जैन द्वारा नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें सर्वश्री महावीर प्रसादजी जैन-संरक्षक, श्री रोशनलालजी जैन-चेययरमैन, श्री जगदीशचन्द्रजी जैन-प्रधान, डॉ. आनंदप्रसादजी जैन एवं श्री राजपाल जी जैन-उप प्रधान, डॉ. ईश्वर जी जैन-महामंत्री, श्री राजिन्द्र जी जैन-मंत्री, श्री बिजेन्द्रजी जैन-कोषाध्यक्ष, श्री वीरेन्द्रजी जैन-सहकोषाध्यक्ष, श्री सुरेश जी-अधिवक्ता लेखा परीक्षक को मनोनीत किया गया। श्री जगदीशचन्द्र जी जैन ने सभी सदस्यों व पदाधिकारियों से समपर्ण भाव से सेवा व सहयोग करने का अनुरोध किया।

प्रेषक : जगदीश चन्द्र जैन

शिर्डी में होगा कंठस्थ प्रतियोगिता का आयोजन

शिर्डी (महाराष्ट्र) : कंठस्थ प्रतियोगिता का आयोजन परम पूज्य डॉ. धर्मशीलाजी म. की सुशिष्या पू. डॉ. पुण्यशीला जी म. एवम् पू. श्री कीर्तिशीला जी म. के सान्निध्य में शिर्डी में दिनांक २४ अक्टूबर को ज्ञानपंचमी के दिन रखा गया। जो भी बच्चे, युवा, युवती इसमें भाग लेंगे उन्हें 'ज्ञानपंचमी' के दिन शिर्डी जैन स्थानक में पधारना होगा। प्रतियोगिता के नियम के अनुसार 5 वर्ष से 15 वर्ष तक के बच्चे, 16 से 25 वर्ष तक के युवा वर्ग के लिए है। 5 वर्ष से 7 वर्ष तक के जिन बच्चों की वीरथुई कंठस्थ होगी, उनकी माता को भी 'वीरमाता' पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। 'कालावधी' 20 सितम्बर से 17 अक्टूबर 2017 तक जो भी 'वीरथुई कंठस्थ' करेंगे उन्हें शिर्डी में महाराज साहब को सुनाना होगा। दिनांक 17 अक्टूबर तक अपने नाम देना अनिवार्य हैं।

प्रेषक : सीमा झांबड़

पू. श्री ज्ञानमुनिजी म. की निश्रा में आचार्य जयमलजी व शिवाचार्य जयंती

सैदापेट, चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सैदापेट के तत्वावधान तथा आचार्य हस्ती-शिष्य श्रमणसंघीय संत श्री ज्ञानमुनिजी की निश्रा में आचार्य पू. श्री जयमलजी म. तथा आचार्य पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. की जयन्ती त्याग-तप, सामायिक, जीवदया और मानवसेवा के साथ मनाई गई। मानवसेवा के तहत अन्नदान, नेत्र शिविर तथा अनाथ आश्रमवासियों को भोजन कराया गया। ज्ञानमुनिजी ने कहा कि आचार्य श्री जयमलजी बहुत ही पराक्रमी और संकल्प के धनी थे। प्रसिद्ध आगमिक काव्य 'बड़ी साधु वन्दना' के अलावा सैकड़ों कालययी काव्य और साहित्य की उन्होंने रचना की। उनके रोम-रोम में

सिद्ध-अरिहन्त परमात्मा बसे थे। पूज्य आचार्य डॉ. शिवमुनिजी म. के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए पू. श्री ज्ञानमुनिजी म. ने कहा कि विद्वान, सरल और तपस्वी आचार्यप्रवर पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. ने ध्यान साधना को लोकप्रिय बनाया है। लोकेशमुनिजी, आदीशमुनिजी, अध्यक्ष प्रेमचन्द वैद, मंत्री राजेन्द्र लूंकड़ आदि ने विचार रखे।

प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग

जीव दया प्रेमी श्री जसराज जी का अहमदाबाद में सम्मान व अभिनंदन

अहमदाबाद (गुजरात) : जीव दया के कार्यों में पिछले 25 वर्षों से जुड़े प्रवासी राजस्थानी जीव दया प्रेमी श्री जसराजभाई, श्री श्रीमाल जैन का कोबा स्थित श्री सीमांधर स्वामी मन्दिर के पास स्वगतकर सम्मान के साथ उनका अभिनंदन किया गया। श्री जसराज भाई ने तेलंगाना राज्य के हैदराबाद शहर में 33 ऊंटों को कत्लखाने से मुक्त कराया। मुक्त कराने के साथ इन ऊँटों को 8 ट्रकों में राजस्थान भेजने की व्यवस्थ्ा भी उन्होंने की। हैदराबाद में रहने वाले व मूल रुपसे राजस्थान के गढ़ सिवाना निवासी श्री जसराज श्री श्रीमाल के अनुसार राजस्थान में ऊंटों के कत्ल व तस्करों पर प्रतिबन्ध होने पर भी बड़ी संख्या में ऊँटों को यहाँ कत्लखानों में भेजा जा रहा है। बड़ी संख्या में इन रेगिस्तान (राजस्थान) के जहाजों को यहाँ देखकर इन्हें शंका हुई, जो सत्य ही निकली। हमने इन ऊँटों को कत्ल खाने से बचाकर उन्हें अभय दान दिलवाया।

उनके जीवदया के इस अभियान में-पीपल्स फॉर एनिमल' सस्था के श्री दत्तात्रेय जोशी जी, ग्रेटर हैदराबाद सोसाइटी फॉर ऐनिमल के सुरेन्द्र भंडारी, दिनेश भाई आंचलिया एवं राजस्थान के एनिमल एक्टीवस्ट सुनील मुथा का सराहनीय सहयोग मिला। जीव दया प्रेमी संस्था इन सभी का भी स्वागत किया।

प्रेषक : आर.सी. कटारिया

फ्री हार्ट चेक-अप एवं फुल बॉडी जाँच शिविर

नई दिल्ली : 17 सितम्बर 2017 को गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में फोंटिस एस्कार्ट हस्पताल की टीम द्वारा श्री आत्म-शुक्ल शिव अमर सरिता जन्म जयंती के उपलक्ष में श्रमणी महासध्वी पू. श्री श्रेया जी म. के पावन सान्निध्य में शक्ति विहार एक्स.जैन स्थानक में फ्री हार्ट एवं फुल बॉडी चेक-अप शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 120 व्यक्तियों ने अपने स्वास्थ की जाँच कराई। साध्वी श्री श्रेया जी म. ने आचार्य एवं गुरु/गुरुणी के प्रति यह सेवा कार्य की प्रेरणा देकर उनकी जन्म जयन्ती मनाई। इस प्रकार के सेवा कार्य ही प्रभु की सच्ची भक्ति होती है। गुरु शुक्ल ट्रस्ट के कार्यकर्मों के संयोजक श्री नरेन्द्र जैन ने गुरु भगवन्तों को नमन करके, ट्रस्ट की तरफ से जैन सभा शक्ति नगर एक्स. की सराहना करते हुए क्षेत्र का सौभाग्य बताया। जहां जैन स्थानक में इस प्रकार के कैम्प का आयोजन किया जा रहा रहा है। जैन सभा के पदाधिकारियों एवं अन्य सहयोगियों का ट्रस्ट के पदाधिकारियों द्वारा अभिनंदन, स्वागत किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के समस्त पदाधिकारी श्री विजय गर्ग-प्रधान, श्री नंदीवर्द्धन जैन-उपाध्यक्ष, श्री सुशील जैन-कोषाध्यक्ष व अन्य सभी ने भरपूर सहयोग दिया। हार्ट कैम्प का श्री वैभव जैन, पीतमपुरा शिविर का उद्घाटन रमेश जैन द्वारा किया। स्थानीय श्रावकों के अलावा अनेकों क्षेत्रों से गुरु-गुरुणी भक्तो ने पधारकर अपपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय दिया। फोरटिस एस्कोर्टस हार्ट अस्पताल की डॉक्टरों एवं सहयोगियों द्वारा कैम्प को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग किया। संयोजक श्री गगनदीप ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई साध्वी पू. श्री श्रेया जी म. ने सभ्ज्ञी को इस सफल आयोजन हेतु आर्शीवाद दिया भविष्य में ट्रस्ट के माध्यम से सेवा कार्यों को गतिशील करने की प्रेरणा दी।

प्रेषक : नरेन्द्र जैन

जैन अल्पसंख्यक छात्रों के लिये आवश्यक सूचना

सभी जानते होंगे अभी नूतन विद्यार्थियों के स्कूल/ कॉलेजों में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। सभी माता-पिता ध्यान रखें नीचे दी गई कुछ खास बातें।

1. बच्चे के प्रवेश के वक्त बच्चे का दाखला एल.सी. बहुत जरुरी है। उसमें बच्चे की सम्पूर्ण माहिती होती है। सबसे पहले सभी जैन छात्रों के लिए 'उनके नाम' के पहले जैन लगाये नाकी गौत्र उदाहरणः- छात्र का नाम, पिता का नाम और फिर जैन।
2. धर्म की जगह सिर्फ जैन ही लिखें (हिन्दू जैन, हिन्दू नहीं लिखे)
3. कास्ट/सब-कास्ट जाति उप-जाति की जगह आपका गौत्र ड़ाल सकते हैं।
4. बर्थ प्लेस की जगह- जो छात्र के जन्म प्रमाण-पत्र जो नगर पालिका से दिया जाता है जन्म प्रमाण पत्र पर लिखा है वही ड़ालें। (भविष्य में पासपोर्ट बनाने में दिक्कत नहीं होंगी)।
5. किसी भी प्रकार के फार्म भरते समय, ओपन, एससी, एसटी, ओबीसी, माईनॉरिटी में जैन ही सिलैक्ट करें।
6. सभी को परेशानी होती है यहाँ की जैन माईनॉरिटी के लिए कोई सर्टिफिकेट होता है क्या? तो भारत सरकार से मिली जानकारी से हमें कोई भी सर्टिफिकेट की ज़रुर नहीं। आपका स्कूल का दाखला एलसी ही आपका सर्टिफिकेट है, जिसमें प्रमाण होता है कि आप जैन मायनॉरिटी के लाभार्थी हो इसके लिए आपके एलसी पर धर्म की जगह जैन लिखा होना जरुरी है।
7. सभी ध्यान रखें 1 से 10 तक के छात्रों को - **प्री मैट्रिक स्कॉलरशिप मिलती है** और 11वीं से 12वीं और पोस्ट ग्रेजुएशन तक पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप मिलती है ऑन-लाइन भरना है।
8. अभी जो ऑन-लाईन एडमिशन की प्रोसेस चल रही है उसमें जैन मॉयनारिटी के लिए सर्टिफिकेट के लिए बोला जाता आप सिर्फ जैन मायनॉरिटी सिलैक्ट करें और आगे बढ़े।
9. अगर कोई स्कूल/कॉलेज जैन होने का प्रमाण मांगता है तो आप के यहां के जैन संघ के संघपति/अध्यक्ष के लेटरपैड पर लिख के दे सकते हो। जिसमें इतना लिखें की यह छात्र जैन है यह इस गांव में इतने वर्षों से रहता है और जैन संघ के सदस्य है।
10. जिनके पिता की वार्षिक आय छः लाख से कम है उन्ही के बच्चों को जैन मायनॉरिटी स्कॉलरशिप मिलेगी अपने वार्षिक आय प्रमाण-पत्र पर लाभार्थी की जगह अपने बच्चे का नाम लिखवाना ना भूलें। सरकार ने अपने नियमों के हिसाब से 2.5 लाख की जगह 6 लाख वार्षिक की सीमा तय कर दी है।

प्रेषक : अशोककुमार पगारिया जैन

जैन पुष्प-राज कीमती हॉस्टल का उद्घाटन

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) : दूसरे शहरों एवं राज्यों से आने वाले छात्रों को किफायती दरों पर आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए आज श्री जैन सेवा संघ हैदराबाद जो जैन धर्म के चारों घटकों की प्रतिनिधि संस्था है के तत्वावधान में निर्मित 'जैन पुष्प-राज' कीमती हॉस्टल का उद्घाटन जैन रत्न श्री राजेन्द्र कीमती तथा विदुषी महिला रत्न पुष्पा कीमती द्वारा किया गया। श्री जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोकजी संकलेजा जैन ने जानकारी दी कि हॉस्टल निर्माण संस्था की महत्वाकांक्षी योजना थी इसे आर्थिक सहयोग प्रदान कर

साकार करने का मुख्य श्रेय राजेन्द्र कुमार पुष्पा कीमती परिवार को जाता है। इसी परिवार ने अपने पू. पिता श्री सम्पतलालजी एवं मातृश्री मदनबाई कीमती की पुण्य स्मृति में प्रथम माले में कार्यालय कक्ष के लिए अनुदान देकर उद्घाटन किया। वर्तमान में श्री विनोद कीमती इस संस्था के महामंत्री पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे है।

इस अवसर पर सर्वश्री सुरेन्द्रमल लुणियाजी, धर्मराज रांका, प्रसन्न भंडारी, अमृतकुमार स्वरूपचंद कोठारी, सम्पतराज कोठारी, जसराज देवडा, पूनमचंद कोचेटा, सुनील ओस्तवल, संतोष खींवसरा, राजेन्द्र बोथरा, देवेन्द्र कीमती महेन्द्र कटारिया, रवीन्द्र कीमती, भंवरलाल भंडारी, विक्रम, दीपक कीमती, अशोक, सुरेश कीमती, दिलीप धारीवाल, गौतम गुगलिया, पवन पांड्या, डायचंद डक, अनिल, रूपेन्द्र ओस्तवाल, अनिल पीपाड, हरिकिशन, असावा, आनंद, संजय कीमती, लक्ष्मीनारायण राठी, बाबूलाल, कांकरिया, अशोक, किशोर मुथा आदि अनेक गणमान्य सदस्यों के साथ जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा तेलंगाना अध्यक्षा शोभा बोहरा जैन, मीना मुथा, मोहिनी देवी ओस्तवाल, शशिकला, चन्द्रकला कोठारी, लाजवंती खींवसरा, राजुल सिसोदिया, रत्नमाला साबु, तारा कीमती, राशि कोचेटा, पुष्पा सुराणा, दीपा कांकरिया, रुचि ओस्तवाल, राशि खींवसरा, सुधा, सोनल प्रिया, रेखा अक्षिता, आशा कीमती आदि उपस्थिति रही। **प्रेषक : पुष्पा कीमती**

बाणावार में भव्यातिभव्य महामंगलकारी तीर्थंकर अनुष्ठान का आयोजन

चेन्नई (तमिलाडु) : श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बाणावार के तत्वाधान में श्रमण संघीय जैन दिवाकरिय महासती श्री संयमलताजी म.सा, श्री अमितप्रज्ञाजी म.सा,श्री कमलप्रज्ञाजी म.सा, श्री सौरभप्रज्ञा म.सा आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में 24 घंटे का अखंड महामंगलकारी तीर्थंकर अनुष्ठान संपन्न हुआ।

सूर्योदय के साथ ही मंगलाचरण के पश्चात विभिन्न स्तोत्र एवं प्रार्थना से नवग्रह शान्ति हेतु तीर्थंकर अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। पांच सजोड़े ने मंगल कलश की स्थापना की। अनुष्ठान की महिमा का बखान करते हुये महासती संयमलता ने कहा-हजार साधन होने के बाद भी आदमी को शांति नही मिलती,पदार्थो की प्राप्ति के लिये साधना जरूरी है। जप तप साधना के द्वारा ही अपने अशुभ कर्मो का क्षय एवं पुण्य कर्म का बंधन होता है। मुसीबतें,बाधाऐं सारी खत्म होकर अधूरे काम पूरे होते है। तीर्थंकर की स्तुति करने से उत्कृष्ट रसायान आ जाये तो तीर्थंकर गोत्र का बंध होता है। तीर्थंकर का सहारा लेकर जीवन जीने की कला सीखे। इस दुनिया में आये है तो कुछ ऐसा करके जाने का संकल्प ले कि मरने के बाद भी दुनिया याद करे। धर्म,समाज,परिवार,माँ-बाप और स्वम का नाम रोशन करके विदा होने का संकल्प ले। अहिंसा की ध्वजा विश्व में लहराये। सर्वे भवन्तु सुखिनरूका मंत्र साकार हो जाये। अनुष्ठान की पूर्णाहुति पर महासतीजी ने समस्त अनुष्ठान आराधकों से अपने पूर्व भव या इस भव की वेर भावना की आलोचना करवायी। तीर्थंकर की स्तुति से स्थानक भवन गूंज उठा। प्रत्येक अनुष्ठान आराधक ने ३०,२४० बार मंत्र का उच्चारण किया। सभी आराधकों ने मिलकर देढ़ करोड़ बार मंत्र उच्चारण किया। कुल ३० घरो की जैन बस्ती में लगभग ५०० से अधिक आराधकों ने अनुष्ठान मे भाग लिया। अनुष्ठान में भोपाल, मुम्बई, हैदराबाद, बैंगलौर, जोधपुर, भीलवाड़ा, पुणे, चेन्नई, चित्रदुर्गा, सिंधनूर, गंगावती, हासन, शिमोगा, अर्सीकेरे, भद्रावती, कडूर, मैसूर, रायचूर, बिरूर, चिकमंगलूर, गर्जेंद्रगढ़ से श्रद्धालु शामिल हुये। गौतम प्रसादी के लाभार्थी श्री रूपराजजी, दिनेश कुमारजी बोहरा परिवार रहा। संघ अध्यक्ष किशोरजी बोहरा आभार व्यक्त किया। **प्रेषक : किशोर बोहरा**

273वाँ मासिक मानव सेवा एवं अन्नदानं कार्यक्रम

चेन्नई (तमिलाडु) : भगवान महावीर सेवा समिति के तत्वावधान में प्रति अमावस्या मानव सेवा व अन्नदानं के 273वें कार्यक्रम के तहत बुधवार दिनांक 20 सितम्बर, 2017 को के. के. नगर स्थित लायन्स क्लब प्राथमिक स्कूल में प्रवासित लगभग 250 से भी ज्यादा बालक-बालिकाओं को मिष्ठान युक्त भोजन,फल-फ्रूट अन्य आवश्यक सामग्री का वितरण किया गया तथा उन्हें शाकाहार के बारे में समझाया गया। इसी श्रृंखला में साधार्मिक सेवा के तहत दवाई तथा राशन का वितरण भी किया गया। इसके पूर्व सभी सदस्यों ने माम्बलम जैन स्थानक में नवकार मंत्र का सामूहिक जाप किया।कार्यक्रम में समिति के संस्थापक डॉ. एम.उत्तमचन्द गोठी सहित मोहनलाल चोरडिया, कमलचंद बैद,चेतनप्रकाश पोकरणा, अनोप बेताला, पुखराज-देवराज खाबीया, गौतम मूथा, अनिल लोढ़ा, अशोक सकलेचा, महावीर चौधरी, गौतम-सतीश कोठारी, महावीर-मदन रांका, महेन्द्र गादिया सुशील-संजय-दिलीप-गौतम धोका,राजेश चोपड़ा,महावीर छाजेड़, दिलीप श्रीश्रीमाल उपस्थित थे। समिति द्वारा 274वां प्रति अमावस्या **'अन्नदानं कार्यक्रम'** आगामी 19 अक्टूबर 2017 को दीपावली पर आयोजित किया जायेगा। **प्रेषक : डॉ. एम. उत्तमचन्द गोठी**

शोक समाचार

धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी बाफना जैन का स्वर्गवास

बैंगलोर (कर्नाटक) : धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी बाफना जैन का 4 सितम्बर, 2017 को 55 वर्ष की आयु में बैंगलोर में स्वर्गवास हो गया। आप सदैव साधु-संतों की सेवा में अग्रणी रहते थे। पू. श्री गणेशीलाल जी म. एवं पू. श्री मरुधर केसरी जी म. के प्रति अगाढ़ श्रद्धा रखते थे। जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़े हुये श्रावक रत्न के दो सुपुत्र एवं धर्मपत्नी भी सेवा व सत्कार्य में हर समय तैयार रहते थे। ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी पगारिया के आप जवाई थे। आपके आकस्मिक निधन से बाफना परिवार एवं पगारिया परिवार के साथ ही जैन समाज में अपूर्णीय क्षति हुई है। इस दुःख की घड़ी में जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपके दुःख में सहभागी है। **प्रेषक : अशोक कुमार धोका**

सुश्रावक श्री प्रवीणजी जैन का स्वर्गवास

दिल्ली : सुश्रावक श्री प्रवीण जैन सुपुत्र श्री मेघराज जैन (कसून -जींद वाले) का असमायिक, महापर्व सम्वत्सरी 26 अगस्त, 2017 शनिवार को स्वर्गवास हो गया। जो कुछ दिन से अस्वस्थ चल रहे थे। आपके चार भाई व धर्मपत्नी धर्मपरायण व सुशील श्रीमती सुनीता जैन व एक सुपुत्र श्री अर्हन जैन को छोडकर 51 वर्ष की आयु में ही निधन हो गया। शोक सभा पुष्पाजलि एन्कलेव में हुई, जहां भारी संख्या में सामाजिक, व्यापारिक लोगों ने भाग लिया। आपके परिवार की ओर से कुछ संस्थाओं को दान-राशि भेंट की गई।

आपके परिवार की गहरी आस्था गुरुदेव पू. श्री प्रेमसुख जी म. व गुरुदेव श्री रामकिशन जी म. के प्रति रही है। तीन महीने पहले ही आपकी माताजी श्री जैनमती जैन का भी देवलोक गमन हो गया। हम सभ्ज्ञी भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में शीघ्र स्थान दें और आपके परिवारजनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **प्रेषक : विनय जैन**

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

।। जय आत्म-आनन्द।।

टीकमचन्द छाजेड़,

ब्यावर मो. 9414010690

।। जय महावीर।।

आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिव मुनिजी म.सा. के 76वें जन्मोत्सव एवं युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषिजी म.सा. के 50वें जन्मोत्सव, उपाध्याय प्रवर श्री रविन्द्र मुनिजी म. सा. के 40वीं दीक्षा जयन्ति के उपलक्ष में शत्-शत् वन्दन एवं नमन्। उत्कृष्ट संयमित जीवन के मंगल की शुभकामनाएं।

।। जय देवेन्द्र शिव।।

एडवोकेट अर्पित छाजेड़,

{M.Com., LL.B, LL.M., PH.D. (Running)}

ब्यावर मो. 9214963701

एडवोकेट अर्पित छाजेड़

प्रदेश मंत्री : श्री ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रैन्स (राजस्थान)

पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य : भारतीय जनता पार्टी (व्यापार प्रकोष्ठ), नई दिल्ली

सम्बन्धित फर्म :

निहालचन्द प्यारचन्द छाजेड़

(समस्त प्रकार के ज्वार, चना, जौ, अरण्डी, जीरा आदि के होलसेल क्रेता व विक्रेता)

6 फतेह मार्केट, ब्यावर (राज.) मो. नं. 9414010690

फर्म :

जिनेन्द्र फाईनेन्स

(All type of two, three, four wheeler Finance, Land & Property Finance)

6 फतेह मार्केट, ब्यावर (राज.) मो. नं. 9214963701

फर्म :

जिनेन्द्र कॉमर्स क्लासेज

Proffessional Course : (C.A., C.S., ICWA,) COACHING CLASSES

ब्यावर (राज.) मो. नं. 9214963701

शुभेच्छु : टीकमचन्द, पिस्तादेवी, अर्पितकुमार, प्रीति छाजेड़, ब्यावर

Advt.

एच एस रांका फॅमेली

द्वारा

स्थापित एवम संचालित

रांका फॅमेली फाऊन्डेशन्स

आध्यात्म एवम संस्कृति विकास तथा स्वास्थ्य एवम शिक्षा सेवार्थ

25 वर्षो से समर्पित (1992-2017)

- आचार्य श्री नानेश सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल - बेलापुर, नवी मुंबई
- आचार्य श्री नानेश बॉयज हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश गर्ल्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- महासती श्रीयश वर्किंग वूमन्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश डायलसिस सेंटर - अंधेरी, मुंबई
- रांका भवन (आध्यात्म-विकास) - वर्ली सीफेस, मुंबई
- रांका सेवा सदन (जनसेवा-प्रकल्प) - वर्ली, मुंबई
- रांका कला निकेतन (संस्कृति-विकास) - वर्ली, मुंबई
- शंकर समता भवन (जैन-स्थानक) - भीलवाडा, राजस्थान-सहभागिता
- आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट - दांता, राजस्थान-सहभागिता
- अन्य समाज सेवी संस्थाओं में सहभागिता/सहयोग एवम् संचालन

जनसेवा ही जिनेश्वर की सेवा है – स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश

Advt

RNI NO. 2123/57
Date of Posting 07-08/10/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
अक्टूबर 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 October, 2017

श्री नयनचंदजी हिर... जैन

श्रीमती मुलीबाईजी हिरण जैन

जीवन प्रकाश योजना आधार स्तम्भ

श्री नयनचंदजी हिरण जैन एवं श्रीमती मुलीबाईजी हिरण जैन

खाखरमाला, आमेट, बैंगलोर विजयनगर (कर्नाटक)

समाज सेवी श्री नयनचंदजी हिरण राजस्थान के मेवाड़ में बसे ग्राम खाखरमाला (आमेट) में ज... मे। आपके पिता स्व. श्री धर्मचंदजी जैन माता स्व. श्रीमती बादामबाईजी जैन से मिले सुसं...कारों से सिंचित आप कम उम्र में ही बैंगलोर में पधारे। बैंगलौर में कुछ समय काम सीखने के प...श्चात आपने स्वयं का व्यवसाय मधुवन ज्वैलर्स, न्यू गुडदहल्ली मेंशुरू किया। व्यवसाय में आप... दिन–रात मेहनत कर अच्छी उपलब्धी हासिल की। माता–पिता द्वारा दिये संस्कारों को ध्यान... में रखते हुए आपने समाज सेवा का ध्येय अपने जीवन में रखा। आपने दो वर्ष तेरापंथ युवक... परिषद के अध्यक्ष पद पर सेवा दी एवं उस कार्यकाल में आपने परिषद के लिये अच्छे काम किये। श्री हीरालालजी मालू जैन का आपके लिये विशेष स्नेह रहा, आपके कार्यों को देखते हुए आप...को विजयनगर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पद की सेवा के लिये नियुक्त किया गया। आपके कार्य...काल में विजयनगर में तेरापंथ सभा भवन का निर्माण हुआ। आपने अपने सहयोगियों के साथ... अपने अध्यक्षीय कार्यकाल को यशस्वी बनाया। वर्तमान में आपके तीन व्यवसाय मधुवन ज्वे...र्स, मधुवन प्लाई एण्ड लेमिनेट्स, रायल स्टूडियो, बैंगलोर (कर्नाटक) में अच्छी प्रगति पर हैं।

आपकी धर्म–पत्नी श्रीमती मुलीबाईजी जैन धार्मिक सुस्कारों से ओतप्रोत है। आपने वर्ष...तप, आयम्बिल ओली, ग्यारह, अठाई, मासखमण, तेला आदि कई तपस्यायें पूर्ण की। आपके सुसं...स्कारों से सुसज्जित आपके दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं।

सुपुत्र श्री भूपेन्द्र कुमारजी हिरण जैन एवं श्री ललित कुमारजी हिरण जैन दोनों व्यवसाय एवं... पारिवारिक जिम्मेदारी निभाते हुए समाज सेवा में भी समय दे रहे हैं। आपकी पत्रुवधु लताजी जै... एवं शिल्पाजी जैन पारिवारिक जिम्मेदारी के साथ दिये हुए सुसंस्कारों को आगे बढ़ा रही हैं... आपकी सुपुत्रियाँ श्रीमती कुसुम–मूलचंदजी बोहरा जैन केलवा (भायंदर) एवं सुपौत्रियाँ, प्रे...ा, अदीत जैन, रीद्धी जैन एवं प्रांजल जैन सभी सुसंस्कारों से पल्लिवित हैं। आपका पूरा परि...वार समाज सेवा में समर्पित है। सच में ऐसा परिवार समाज के लिये एक आदर्श परिवार है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना के आ...धार स्तम्भ बनने पर हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

मोहन...लाल चोपड़ा जैन	डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन	महेन्द्र बोकरिया जैन	संजय बोथरा जैन	लादुलाल बाफना जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)	(राष्ट्रीय महामंत्री)	(राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)	(अध्यक्ष-जीवन प्रकाश योजना)	(मंत्री-जीवन प्रकाश योजना)

श्री... ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री अ...ल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भा...त प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित